विचित्र-विचरण।

अर्थात्

गलीवर्स ट्रवल्सका

हिन्दी अनुवाद।

पण्डित जगन्नाथ प्रसाद चतुर्वेदी

कृत।

कलकत्ता।

९७ मुक्ताराम बाबू ष्ट्रीट, भारतमित्र प्रेससे
पण्डित कृष्णानन्द शर्म्मा द्वारा मुद्रित और
प्रकाशित।

सन् १९०३ ई०।

मूल्य ।)

समर्पण ।

यह पुस्तक अपने तीनों पूज्य मामा

पाण्डेय श्रीबलदेवलाल, श्रीगिरिधरलाल

और

श्रीजयकृष्णलालजीके

चरण कमलोंमें

श्रद्धा भक्ति पूर्वक अर्पण करता हूं, जो मेरे पालक, पोषक
और रक्षक हैं तथा जिनके अनुग्रहसे मैंने
लिखना पढ़ना सीखा है।

जन्माष्टमी संवत् १९६०।

गलीवर्स ट्रवल्स।

अङ्गरेजी ग्रन्थकर्त्ताओंमें जोनाथन स्वीफ्टकी भांति किसी ग्रन्थकारका नाम प्रसिद्ध न हुआ। उसकी प्रसिद्धि "गलीवर्स ट्रवल्स" लिखनेसे हुई। जब सन् १७२७ ईस्वीमें यह पुस्तक छप कर निकली तो राजनीतिवाले और साहित्यसेवी दोनों दान्तोंमें उंगली काटने लगे। चारोंओर इसीकी चर्चा थी। हर समालोचक सभामें इसकी आलोचना होती थी। स्वीफ्टके दो चार इष्ट मित्रोंके सिवा ग्रन्थकर्त्ताका नाम कोई न जानता था। ऐसा व्यङ्ग पूर्ण उपाख्यान इससे पहले कभी किसीने नहीं देखा था। लोग बहुत घबरा कर ग्रन्थकर्त्ताका पता लगाने लगे। ऐसा अद्भुत, अननुवादित, हृदयग्राही और सुन्दर ग्रन्थ किसने लिखा है इसकी तलाश होने लगी। राजनीति सम्बन्धी व्यङ्ग इसमें कैसा छिपा हुआ है रसिकता श्लेष और अन्योक्तिका यह कैसा खजाना है समाज और चीजों पर कैसे सुन्दर कटाक्ष इसमें किये गये हैं यह देख देख कर लोग मुग्ध होते थे। सर वाल्टर स्काट एक प्रसिद्ध कवि कहते हैं—"गलीवरका एक शब्दभी व्यर्थ नहीं। समस्त मानव जातिके पापोंका वर्णन जब वह एक घड़ीके लिये भी छोड़ देता है तो उसकी बातें इङ्गलेण्डकी राजनीति समाजनीति और वहांके दरबार पर आपड़ती हैं। जब वह इधरसे हटता है तो शौकीन दुनियांके पापोंका या फिलासफोकी निष्फलताका खाका खेंचता है। पुराने यात्रियोंको भी उसने अच्छी धूल उड़ाई है। मनुष्योंके पाप, मूर्खता, नीचता राजनीतिकी त्रुटियों और सामाजिक दोषोंको दूसरों पर ढाल कर खूब दिखाया है।"

सन् १७०२ ईस्वीसे १७१४ ईस्वी तक रानी एन, १७१४ से १७२७ ई० तक प्रथम जार्ज और १७२७ से १७६० ई० तक दूसरे

जार्जने इङ्गलेण्डका राज्यशासन किया। रानीएनके ओक्सफोर्ड और बोलिङ्गब्रोक मन्त्री थे। यह सब टोरी थे। प्रथम जार्जने गद्दी पर बैठ कर वालपोलको प्रधान मन्त्री बनाया। वह ह्वीग अर्थात् प्रजाहितैषी दलका था। वालपोलके समयमें रिशवतका बड़ा जोर था। हौस आफ कामन्सका वोट खूब बिकता था। स्वीफ्ट इन लोगोंसे प्रसन्न न था। विशेषकर जब रानी एनके ऊपर कहे हुए मन्त्रियों पर दूसरे जेम्स का अनुयायी कह कर अभियोग चलाया गया तो स्वीफ्ट और भी चिढ़ा। ओरमण्ड वोलिङ्ग ब्रोक और ओक्स फोर्ड नामके तीन मन्त्रियोंमेंसे पहले दो तो फरांसको भाग गये और शेष तीसरेको दो सालकी जेल हुई। दूसरे जार्ज के समयमें भी वालपोल मन्त्री था पर पीछे वह निकाला गया। वालपोल रूखा देहाती बुद्धिमान था। बहुत पढ़ा लिखा न था। अच्छे आदमी उससे प्रसन्न न थे। इन लोगों पर गलीवर्स ट्रवल्स में खूब नोक झोंक है।

विचित्रविचरणके पहले भाग लिलीपटमें प्रथम जार्ज और प्रधान मन्त्रीकी नीतिका वर्णन है। वालपोलको खजानची फ्लिम-नप बना कर खूब दिल्लगोकी है। ऊंची एड़ी और नीची एड़ी वालोंसे मतलब टोरी और ह्वीग दलके लोगोंसे हैं। अण्डेको छोटे सिरे और बड़े सिरेकी ओरसे तोड़नेका मतलब रोमन केथ-लिक और प्राटेष्टेण्ट दलोंका आपसमें मत भेद है। इंगलेण्डको लिलीपट और फरांसको ब्लेफस्कू बनाया है। गलीवरका ब्लेफस्कू जाना वेलिङ्गब्रोकका फ्रांस भागना है। इसी प्रकार और सब बातें हैं।

लिलीपटमें व्यक्तिगत आक्रमणहै और दूसरे भाग ब्रोवडिगनेगमें साधारण समाज पर कटाक्ष हैं। इन दोनोंमें ह्वीग यानी लिब-रल दलवालों पर, वालपोल और इंगलेण्डकी राजनीति पर चोटें हैं। तीसरे भाग लपूटामें उस समयकी गणित और दर्शनवालोंके साथ छेड़ छाड़ है। विशेष कर रायल सोसाइटीवालों पर अधिक

कटाच है जिनसे स्वीफ्टकी कुछ अनबन थी। बलनीववींसे मतलब है इंगलेण्ड और लगाडोसे लण्डन।

तीनों यात्राओंमें उस समयके विशेष लोगों सभा समाज दार्श-निकों राजा राज दरबार मन्त्री और राजनीतिवालोंका खाका है। चौथे भागमें मानव जातिके दोषों पर बड़ा तीव्र कटाच है। कुछ समझ दार लोग कहते हैं कि कटाच अधिक तीव्र होगया। मनुष्यकी इतनी हीनता न दिखाना थी। कुछ हो विलायतमें यह पोथी अद्वितीय मानी गई है।



नं० १

जोनाथन स्विफ्ट ।

भूमिका।

यह "विचित्रविचरण" जोनाथन स्विफ्टके बनाये "गलीवर्स ट्रवल्स" का अनुवाद है। स्वीफ्ट अङ्गरेजीका एक नामी लेखकथा। राजनीति विशारदोंमें इसका बड़ा नाम था। उसका जन्म ३० नवम्बर १६६७ ईस्वीमें हुआ। वह १६८२ ईस्वीमें डबलिनके ट्रीनिटी कालिजमें दाखिल हुआ। उस समय उसके चेहरेसे उसको भविष्य सुविख्यातिके कुछ भी चिन्ह नहीं दिखाई देते थे। गोल्डस्मिथको भांति यह भी पढ़ाईकी पुस्तकोंको छोड़ कर इधर उधरकी पुस्तकें पढ़ा करता। लड़कपनमें उसने खर्चकी भी बड़ी तङ्गी उठाई थी। बी० ए० पास करनेसे पहले उसका चचा गौडविन मर गया था जो उसे खर्च दिया करता। तब उसका दूसरा चचा ड्रायडन उस की सहायता करने लगा पर पूरी सहायता न कर सकता था। इस तङ्गीने उसे जन्म भरके लिये किफायतसे खर्च करनेकी आदत सिखाई। बहुत धन कमाने पर भी उसकी मुट्ठी ढीली नहीं होती थी। १६८५ ईस्वीमें बी० ए० की परीक्षा दी पर पास न हुआ। अन्तमें रियायती पास हुआ।

कालिज छोड़नेके पीछे वह पुस्तकालयमें बहुत पढ़ता था। वहीं उसकी बुद्धि तेज हुई। १६८२ ईस्वीमें आक्सफोर्डसे एम० ए० पास किया। पीछे एक गिर्जाघरका अधिकारी हुआ राजनीति में वह टोरी दलका पक्षपाती था। पुस्तकें लिख कर उक्त दलको सहायता करने लगा। राजनीति विषयकी कई एक अच्छी अच्छी पुस्तकें उसने लिखीं। ह्वीगदलमें अपने लेखोंसे उसने हलचल डाल दी।

सन् १७२६ ई०में "गलीवर्स ट्रवल्स" का प्रथम भाग प्रकाशित हुआ। ग्रन्थ कर्त्ताका नाम उस समय सब पर अप्रगट था। डाक्टर

जान्सनकी अङ्गरेजी भाषामें बड़ी धाकहै। वह तीव्र समालोचनाके लिये प्रसिद्धहैं। वह इस ग्रन्थके विषयमें लिखतेहैं—"गलीवर्स ट्रवल्स ऐसी अनूठी और नई चीज है कि पाठक उसे पढ़ते पढ़ते आनन्द और आश्चर्यमें एक साथ डूब जाते हैं। छोटे बड़े पण्डित मूर्ख सब इसे चावसे पढ़ते हैं।" जब यह पुस्तक छप कर प्रकाशित हुई तो समालोचक समालोचना भूल कर एक स्वरसे इसकी प्रशंसा करने लगे। यहां तक कि बहुत जल्द इसका फ्रेञ्च भाषामें अनुवाद होगया।

स्वीफ्ट बड़ा उत्साही और सदाचारी था। जब वह गिर्जाका अधिकारी था उस समय उसने सदाचारी विद्वानोंकी बड़ी उन्नति की। मरते दम तक सदाचार फैलानेमें तत्पर रहा। १९ अक्टोबर १७४५ ईस्वीमें उसका देहान्त हुआ। वह बड़ा नामी लेखक था। हास्य और व्यङ्ग लिखनेमें अद्वितीय था। यशके लिये कभी कोई काम न करताथा।

धन्यवाद।

इस पुस्तकके अनुवाद करनेमें मुझे श्रीयुक्त पाण्डेय उमापति दत्त शर्म्मा बी० ए० से बहुत कुछ सहायता मिली है। आप कलकत्तेके श्रीविशुद्धानन्द सरस्वती विद्यालयके प्रधान अध्यापक हैं। आपकी ड्यूटी बहुत भारी है तथापि जब जहांसे जो कठिन बात मैंने उनसे पूछी उन्होंने उसी समय बताई। केवल इतनाही नहीं वरञ्च जिन गूढ़ बातोंका ठीक तात्पर्य्य समझनेमें उन्हें कुछ शङ्का हुई उनको अच्छे अच्छे अङ्गरेज विद्वानोंसे निश्चय कर मुझे बताया। आपकी ऐसी कृपा बिना मैं यह पुस्तक ऐसी सुगमतासे कभी समाप्त न कर सकता।

२०, बांसतल्ला ष्ट्रीट
कलकत्ता।
१६—८—१९०३। } जगन्नाथ प्रसाद चतुर्वेदी।

॥ श्रीः ॥

विचित्र-विचरण।

प्रथम खण्ड।

लिलीपटकी यात्रा।

प्रथम परिच्छेद।

मेरा घर है विलायतके नटिङ्गाम शहरमें। वहां मेरे पिताकी कुछ जायदाद थी। बस उसीसे जीविका निर्वाह होती थी। मुझे लड़कपनहीसे समुद्र यात्राका बहुत शौक था। मेरे पिताके पांच लड़के—मैं उनमेंसे तीसरा हूं। जब मैं चौदह वर्षका हुआ तो पिताने केम्ब्रीज शहरके "इमेनुएल कालेज" में मेरा नाम लिखवा दिया। वहां मैंने तीन वर्ष खूब जी लगाकर पढ़ा। मैं बहुतही कम खर्चमें अपना गुजारा करता तथापि पिताकी आय थोड़ी होनेके कारण। खर्च चल न सका। लाचार पढ़नेकी इतिश्री कर लण्डन शहरके प्रसिद्ध डाक्टर मिष्टर जेम्स बेटस्के यहां काम सीखने पर नियत हुआ। यहां चार बरस रह कर मैंने डाक्टरी सीखी। पिता भी खर्च वर्चके लिये कभी कभी कुछ भेज देते थे। मैं उसे जहाज चलानेके काम तथा देशाटनके उपयोगी गणितोंके सीखनेमें खर्च करताथा क्योंकि मैं जानताथा कि मुझे देश देशान्तरकी हवा खानी पड़ेगी। मिष्टर बेट्सको छोड़ कर जब मैं घर आया तो पिताने काका जोन तथा और कई नातेदारोंकी सहायतासे मुझे चार सौ रुपये दिये और तीनसौ वार्षिक देनेकी प्रतिज्ञा भी की। मैं रुपयोंको ले "लिडन" गया और यहां वैद्यक पढ़ने लगा क्योंकि मुझे पहलेसे मालूम था कि ये सब विषय लम्बी समुद्र यात्राके

लिये बहुत उपयोगी हैं। "लिडन" से लौट कर मैं अपने पुराने स्वामी मिष्टर वेट्सकी सुफारशसे "खालो" जहाजका डाक्टर मुकर्रर हुआ। इस जहाजके कप्तानका नाम अबराहाम पेनेल था। इनके साथ मैंने दो चार जल-यात्राएं भी कीं। साढ़े तीन वर्षके बाद नौकरी छोड़कर लण्डन शहरमें डाक्टरी करनेकी इच्छा हुई। आखिर मैंने वही किया। मिष्टर वेट्सने केवल मेरा उत्साह ही नहीं बढ़ाया वरन् बहुत कुछ सहायता भी की। बल्कि यों कहना चाहिये कि उन्हींकी कृपासे मेरी डाक्टरी चल निकली। ओल्ड जूरी मुहल्लेमें एक छोटासा घर भाड़े पर लेकर मैं रहने लगा। बन्धुबान्धवोंके बहुत समझाने बुझानेसे मैंने अपना व्याह किया। दहेजमें चार हजार रुपये नकद मिले।

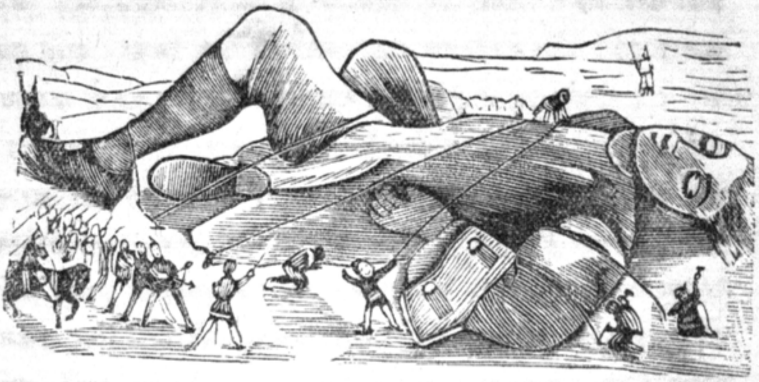
दो वर्षके बाद मेरे परमहितैषी मिष्टर वेट्स परमधाम पधारे। फिर कोई सहाय मिला नहीं इससे मेरा काम भी ढीला पड़ गया। और डाक्टरोंकी तरह केवल आडम्बरसे पैसा पैदा करना मुझे पसन्द न था। अतएव फिर जल यात्राही की ठहराई। स्त्री और इष्ट मित्रोंने भी यही अनुमति दी। बस अपनी दुकान उठा कर मैंने नौकरी करली। लगातार छः वर्ष तक दो जहाजोंमें मैं डाक्टर रहा और अमेरिकाके टापुओंको तथा हिन्दुस्थानको भी देख आया। इन सफरोंमें मुझे रुपये भी खूब मिले। जब काम से छुट्टी मिलती तो मैं प्राचीन और आधुनिक ग्रन्थकारोंकी उत्तम उत्तम पोथियां पढ़ता। जब जहाज किनारे लगता तो मैं उतर कर वहांके निवासियोंकी रीति नीति, रङ्ग ढङ्ग और चाल चलन ध्यान से देखता तथा उनकी भाषाएं सीखता था। मेरी स्मरण शक्ति बहुत तीव्र थी इसलिये इस कामको मैं सहजहीमें करलेता था।

पिछली यात्रामें विशेष कुछ लाभ नहीं हुआ। इसवास्ते इस कामसे जी हट गया। बालबच्चोंके साथ घरही पर दिन बिताने की इच्छा हुई। ओल्डजूरीसे "फेटरलेन" में और वहांसे "वापिङ्ग" मुहल्लेमें अपना डेरा डन्डा उठा लाया। आशा थी कि जहाजियों

की मददसे कुछ काम मिल जायगा परन्तु पूरी नहीं हुई। तीन बरसके बाद "एण्टीलोप" जहाजके स्वामी कप्तान विलियम प्रीचर्डने जो दक्षिण सागरकी यात्रा करनेवालेथे मुझे अपने जहाजकी डाक्टरीका काम दिया। ता० ४ मई सन् १६९९ ई० को हम लोगोंने ब्रिष्टल बन्दरसे जहाजका लङ्गर उठाया। जहाज भी चल निकला। कुछ दिन तक हम लोगोंकी खूब चैनसे कटी।

एक दिन अकस्मात् ऋतु पलट गई! दक्षिण सागर होकर जब हम लोग भारतवर्षकी ओर जारहे थे एक भयानक तूफानने हम लोगोंको आघेरा। हम राह भूल कर "वानडाइमन" द्वीपकी पश्चिमोत्तर दिशामें जापड़े। विचारनेसे मालूम हुआ कि हम लोग विषुवत रेखासे ३० डिग्री २ मिनट दक्षिण हैं। हम लोगों मेंसे बारह तो कड़ी मेहनत तथा सड़ा गला अन्न खाकर कालके गालमें समाये और शेषकी बुरी दशा थी—चेहरेसे सबके कमजोरी टपकती थी। पृथ्वीके जिस भागमें हम लोग पहुंचे वहां नवम्बरही में ग्रीष्म ऋतु आरम्भ होता है। तीसरे पहर वहां सदा वायुका वेग बढ़ जाता है। पांचवीं नवम्बरको जहाजियोंने सामने एक पहाड़ देखा। आकाश भी बादलोंसे घिरा था। सबके प्राण सूख गये। बचनेके लिये बहुत चेष्टाकी गई पर फल कुछ नहीं हुआ। वायु ऐसे वेगसे चली कि जहाज चटपट पहाड़से टकराके टुकड़े टुकड़े होगया। पांच जहाजी प्राण बचानेके लिये एक किश्ती पर चढ़के भागे। मैं भी उन्हीं लोगोंके साथ था। हम लोग जी जानसे डांड़ चलाने लगे पर तौ मीलसे भी ज्यादे न जासके, थक कर बिलकुल बेकाम होगये—आगे बढ़नेकी भी शक्ति न रही। जहाज परकी कड़ाचूर मेहनतसे हम लोगोंका काम तमाम हो चुका था तिस पर इतनी और हुई! लाचार हो किश्तीको भाग्यके भरोसे छोड़ दिया। आधे घण्टेके बाद उत्तरसे आई हुई हवाके झोंकेने हमारी किश्तीको उलट दिया। मेरे साथियोंको अथवा जहाजके सब आदमियोंकी क्या दशा हुई मुझे मालूम नहीं।

सम्भवतः वह सब समुद्रके अतल जलमें महा निद्राका सुख अनुभव करते होंगे। ईश्वरकी दयासे मेरी जान बच गई। मैं तैरने लगा। हवा और लहरें जिधर राह बतातीथीं मैं उधरही जाता था। जल अथाह था। तैरते तैरते थक गया। आखिर थाह मिली। पानी गले भर था। तूफानका भी जोर घट गया था। चढ़ाव इतना कम था कि लग भग एक मील चलनेके बादही किनारे पर जा पहुंचा। उस समय रातके आठ बजे होंगे। एक मील फिर चला परन्तु बस्ती या आबादीका कोई चिन्ह दिखाई न पड़ा। कमजोरीके कारण शायद सुझिही न सूझा हो। एक तो थकावट दूसरे गर्मी तिस पर शराबका निशा पैर उठाना पहाड़ होगया फिर चलना कैसा? लाचार हो वहीं घास पर लेट गया। घास नन्हीं नन्हीं और मुलायम थीं। लेटतेही नींदने धर दबाया। फिर क्या था लगा खर्राटे लेने। मैं खूब सोया। ऐसी गाढ़ निद्रा भला कभी काहेको आई होगी? नौघण्टे के बाद आंखें खुलीं तो देखा दिन चढ़ आया है। उठना चाहा पर उठ न सका। मैं चित्त लेटा हुआ था। देखा मेरे हाथ पैर मजबूतीसे खूंटेके साथ बंधे हैं। सिरके बालभी जो घने और लम्बे थे उसी प्रकार जमीनसे जकड़े हुए हैं। मतलब यह कि मेरा सारा शरीरही बंधा हुआ था। हिलने डोलनेकी भी शक्ति मुझमें न थी। सिर्फ ऊपरकी ओर देख सकता था। धूप तेज होगई थी। आंखें भी झुलसने लगीं। चारों तरफ पिनपिनीसी आवाजमें कुछ शोर गुल होरहा था जो मेरी समझमें न आया। मैं आकाशके सिवा और कुछ नहीं देख सकता था। कुछ देरके बाद मालूम हुआ कि कोई चीज बायें पैर पर रेंग रही है। जब वह छाती पर होती हुई ठोड़ीके पास आपहुंची तो बड़ी कठिनाईसे नजर नीची करके मैंने देखा। ओफ! देखतेही बुद्धि चकरा गई। आश्चर्यका ठिकाना न रहा। जिसका कभी सपनेमें भी ख्याल नहीं हो सकता है आज उसे प्रत्यक्ष देखा। असम्भवको सम्भव होते देखा अधिक क्या



नं० २

देखा मेरे हाथपैर मजबूती से खूंटेके साथ बन्धे हैं।



नं० ३

कोई चीज बांएं पैर पर रेंगरही है।

पृष्ठ ४

कहूं मैं अपनी सुध बुध खो बैठा ! मेरा अजब हाल था। मैं कुछ भी स्थिर न कर सका कि मैं जागता हूँ या सोता। आंखें बन्दकीं तो अन्धकार और खोलदी तो वही अनूठी वस्तु देखी। तब निश्चय हुआ कि सोता नहीं जागता हूं—जो कुछ देखता हूँ वह झूठ नहीं सच है।

द्वितीय परिच्छेद।

पाठक मैंने क्या देखा सो बताऊं ? अच्छा सुनिये, मैंने देखा आदमी—हां आदमी देखा जिसके आंख नाक मुंह सब हमारे जैसे थे पर ऊंचाई आधे फुटसे अधिक न थी और जिसके हाथमें धनुष बाण तथा पीठ पर तर्कश था। वह अकेला न था उसके पीछे चालीस और थे। वह सब भी ऐसेही थे। उनको देख कर मैं इतने जोरसे चीख उठा कि वे सबके सब मारे डरके पीछे भहरा पड़े। पीछे मालूम हुआ कि मेरी देह परसे कूद कर भागनेमें बहुतों को चोट लगी—किसीके हाथ टूटे, किसीके सिर फटे और कोई बिचारा तो वहीं ढेर होगया। लेकिन वह सब बड़े साहसी थे—दल बांधकर फिर चढ़ आए। उनमेंसे एक जो अधिक साहसी मालूम होता था मेरे मुंहको अच्छी तरह देख भाल कर आश्चर्यके साथ पिनपिनी किन्तु ऊंची आवाजमें बोला "है कीनाह डीगल"। दूसरे लोगोंने भी इसी वाक्यको कई बार कहा। लेकिन इसका अर्थ क्या है सो उस समय मेरी समझमें न आया। मैं बराबर उसी प्रकार पड़ा रहा। पाठक समझ सकते हैं कि उस समय मुझे कितना कष्ट होगा। बहुत दुःखित होकर मैंने एक झटका दिया जिससे रस्सी टूट गई और खूंटे उखड़ गये। बायां हाथ बन्धनसे मुक्त हुआ। कष्ट तो तनिक हुआही पर एक झटका और मैंने दिया। अबकी बायीं ओरका बन्धन जिसमें बाल बंधे हुए थे टूट गया। अब जरा सिर घुमानेका मौका मिला। मन में आई कि बायें हाथसे उन्हें पकड़ लूं पर वे सबके सब भाग गये

एकको भी न पकड़ सका। इस पर उन सबने बड़ी खुशी मनाई। उनमेंसे एकने जोरसे चिल्ला कर कहा "टेलगोफोनेक"। बस मेरी बांह पर सैंकड़ों तीर जो सूईके समान थे बरसने लगे। इसके सिवा आकाशकी ओर भी वे लोग बाण छोड़ने लगे। किन्तु इस बाण वृष्टिका असर मुझ पर कुछ भी नहीं हुआ। बहुतोंने मेरे मुंह की तरफ बाण मारे थे लेकिन वह सब सूईके बराबर थे। मैंने बायें हाथसे अपने मुंहकी रक्षाकी। बाण वृष्टि बन्द हुई। मैं अपनी दशा पर रोता था। जब बन्धन तोड़नेकी कोशिश करता तो तीरोंकी वर्षा होती। उन लोगोंने भाले भी चलाये पर भाग्यसे चमड़ेका कोट बदनमें था इसलिये कुछ हुआ नहीं। अगर मैं चाहता तो उठ भागता पर ऐसा किया नहीं। चुप चाप पड़े रहना अच्छा समझा। सोचा बायां हाथ खुलही चुका है रातको सहजमें निकल भागूंगा। अगर यहांके सब आदमी इसी परिमाणके हैं तो डर क्या है? मैं सबको एक साथही खबर ले सकता हूं। बस यही सब सोच बिचार कर मैं चुपचाप पड़ा रहा। पर जो सोचा सो हुआ नहीं। जब मैं शान्त हुआ तो वह सब भी शान्त हुए किन्तु आवाजसे मालूम हुआ कि उनका दल बढ़ रहा है। मुझसे कोई चार गजकी दूरी पर दाहिने कानके पासही प्रायः एक घण्टे तक ठक ठक शब्द होता रहा मानो कोई कुछ ठोंका ठांकी कर रहा है। सिर उठाया तो देखा वे सब मचान बना रहे हैं। मचान धरतीसे एक हाथ ऊंचा था। उसमें दो तीन सीढ़ियां भी लगी हुई थीं और उस पर चार पांच आदमी—वही छः इञ्च वाले— मजेमें खड़े हो सकते थे। मचान तैयार होजाने पर चार आदमी उसपर चढ़ गये। उनमेंसे एकने जो सयाना और चतुर मालूम पड़ा मेरी ओर निहार कर एक लम्बी वक्तृता दी जिसका मतलब मैंने कुछ भी नहीं समझा लेकिन उसके भाव भङ्गीसे प्रगट हुआ कि वह कभी मुझे डराता धमकाता, कभी समझाता बुझाता और कभी मुझसे विनय प्रार्थना करता था। व्याख्यान आ-



नं० ४

हुक्म पातेही सैकड़ों आदमी टोकरोंसे लदे मेरी छाती पर आ पहुंचे।

पृष्ठ ७

रक्षा करनेके पहलेही वक्ताने तीन बार ज़ोरसे कहा था "लङ्गरो डेवल सान"। इतना सुनकर पचास आदमी उसी परिमाणके आये और मेरे सिरका बन्धन काट कर चले गये। तब मैंने वक्ता की ओर सिर घुमाया। उसकी उमर लग भग पचास वर्षकी होगी। अपने साथियोंसे वह कुछ लम्बा था मैंने बहुत नम्रताके साथ बायां हाथ उठा कर उनकी बातोंका जवाब दिया। सूर्य्यकी तरफ इशारा करके कसम भी खाई कि मैं बुरी नीयतसे यहां नहीं आया हूं और न यहांके जीवोंको कुछ बुराई करूंगा। जहाज छोड़नेके बादहीसे खानेके लिये कुछ नहीं मिला था—भूख के मारे तबीयत बेचैन थी—जङ्गल जानेकी हाजत थी। कातर होकर मैंने बार बार उंगलियोंको मुंहमें डालकर खानेका इशारा किया। उसने मेरी बातोंको तो नहीं समझा पर ईश्वरकी दयासे मेरे मनके भावको समझ लिया।

मचानसे उतर कर उस आदमीने जो सबका सरदार था अपने नौकरोंको खाने पीनेकी सामग्री लानेके लिये कहा। हुक्म पातेही सेकड़ों आदमी टोकरोंसे लदे मेरी छाती पर आ पहुंचे। मेरे पेट पर चढ़नेके लिये उन्हें सीढ़ियां लगानी पड़ी थीं। मेरे आनेकी खबर पातेही वहांके राजाने पहलेहीसे मेरे खाने पीनेका बन्दो-बस्त कर दिया था। भोजन स्वादिष्ट था पर सबको मैं पहचान न सका। मांस भी कई तरहके थे। भेड़ेका मांस लेकिन अधिक था। बन्दूककी गोलियोंकी बराबर पावरोटियां थीं। मैं चार चार पांच पांच रोटियोंका एकही कौर करताथा। मेरा खाना देख कर वह सब दङ्ग होगए। अब आई शराबकी बारी। मेरे भोजन हीसे उनको मालूम होगया कि थोड़ी मदिरासे काम नहीं चलेगा। इसी लिये उन्होंने अपने यहांके सबसे बड़े पीपेका मुंह खोल कर मेरे हवाले किया। मैं उसे एकही घूंटमें साफ कर गया। उनकी उस बड़े पीपेमें डेढ़ दो छटांकसे ज्यादे शराब न होगी। लेकिन शराब थी बड़ी मजेदार। मैंने एक पीपा फिर खाली किया।

जब और मांगा तो कोरा जबाब पाया क्योंकि उधर तो भण्डारही खाली होगया था। इन सब अद्भुत कामोंको जब मैं कर चुका तब वह सब मारे खुशीके मेरे पेट पर कूदने लगे और बार बार पहले की भांति "हेकीनाह डीगल" कहने लगे। इसके बाद उन्होंने दोनों पीपोंको फेंक देनेके लिये इशारा किया और जो लोग जमीन पर खड़े थे उनसे गरज कर कहा "बोराकमिभोला"। इतना सुनतेही भीड़ एक तरफ हट गई। जब मैंने पीपोंको उठा कर फेंक दिया। तब वह लोग फिर बोले "हेकीनाहडीगल"। वह क्षुद्रजीव निडर होकर जब मेरी देह पर नाचने कूदने लगे तो उनकी ढिठाई देख मुझे बहुत क्रोध आया। जीमें तो आई कि इन्हें उठा कर जमीन पर पटक दूं परन्तु कुछ सोच विचार कर मन मारके रह गया। जब मैं खा पी कर निश्चिन्त हुआ तो एक उच्च राजकर्म्मचारी दाहिने पांव परसे धीरे धीरे मेरे मुंहके सामने आया। उसके चेहरे पर क्रोधकी झलक तक न थी। उसने शान्ति और गम्भीरता पूर्वक कोई दस मिनट तक बातें कीं किन्तु मैंने कुछ भी न समझा। वह आगेकी तरफ इशारेसे कुछ बताता भी था जिसका मतलब पीछे खुला। वहांसे आधी मील की दूरी पर राजधानी थी वहीं चलनेके लिये वह कहता था। राजाकी तरफसे वह मुझे बुलाने आया था। मैंने भी इशारेमें कहा कि मुझे छोड़ दो। पर उसने सिर हिला कर समझा दिया कि यह बात नहीं होनेकी। इशारेहीसे उसने यह भी जताया कि चाहे जैसे हो वह सब मुझे राजधानी जरूर ले जायंगे और वहां खूब खाने पीनेके लिये देंगे, खातिर करेंगे और किसी प्रकारकी तकलीफ नहीं होने देंगे। इन सब बातोंको पुष्ट करनेके लिये उसने राजाकी मुहर दिखाई पर मुझे एक न भाई, मनमें आई कि निकल भागूं लेकिन उनकी बाण दृष्टि याद कर मनकी बात मनहीमें भुलाई। उन लोगोंका दल भी बहुत कुछ बढ़ चुका था। निदान सोच विचार कर वहीं चलनेकी बात ठहराई। वह राज

कर्मचारी मेरे मनका भाव समझ कर बड़ी खुशीके साथ वहांसे बिदा हुआ। थोड़ी देरके बाद "पेपलम सेलम" की अवाजसे आकाश गूंज उठा। कई आदमियोंने आकर बाईं ओरके बन्धन को ढीला कर दिया। करवट बदलनेका मौका मिला। बहुत देरसे पेशाबकी हाजत थी—सो फुरसत पातेही पहले मैंने पेशाब किया—तबीयत हलकी हुई। लेकिन वह सब मेरे पेशाबको देख आश्चर्य मानने लगे बल्कि बहुतेरे तो डूब जानेके डरसे इधर उधर भाग गये। उन लोगोंने एक महा सुगन्धित मरहम मुंह और हाथोंमें लगा दिया जिससे तीरकी जलन जाती रही। सब पीड़ा दूर हुई। शरीरको आराम मिला मैं भी लगा खर्राटे लेने।

तृतीय परिच्छेद।

जब आंखें खुलीं तो अपनेको एक लम्बी गाड़ी पर बंधा हुआ पाया। गाड़ी खड़ी थी और हजारों आदमी मुझे घेरे थे।

मैं आठ घण्टे खूब सोया या बेहोश रहा। राजाके डाक्टरोंने शराबमें बेहोशीकी दवा मिला दी थी बस उसीसे इतनी देर बेसुध पड़ा रहा। ये सब भेद पीछे खुले थे। जब मैं घास पर सोया हुआ था जासूसोंने जाकर महाराजको खबर दी। उन्होंने उसी समय अपने आदमियोंको समझा बुझा कर मेरे पास भेजा। उन लोगोंने आकर मेरे हाथ पैर बांध दिये जैसा कि ऊपर मैं कह आया हूं। उधर महाराजने मेरे भोजनादिकी सामग्री तथा एक बहुत लम्बी गाड़ी तैयार करनेके लिये आज्ञा दे दी। बहुत से लोग महाराजके इस कामकी बुरा बता सकतेहैं—युरप वाले तो कदापि इसे पसन्द नहीं करेंगे—परन्तु मेरी रायसे ऐसे मौकों पर यही करना उचित है। अगर महाराजके आदमी आकर एका एक मुझ पर आक्रमण कर बैठते या मुझको जगा देते तो मैं गुस्से से उठ कर उनको पीस डालता। महा अनर्थ होता। आपसमें द्वेष बढ़ता। अतएव महाराजने जो कुछ किया सो बहुत ठीक और उचित था। न सांप मरा न लाठी टूटी।

इस देशके निवासी गणित विद्याके पूरे पण्डित होनेके अलावे कारीगर बड़े भारी हैं। कल कांटेका बनाना तो इन सबके लिये सहज काम है। यहांके महाराज विद्याके परमानुरागी हैं। आप के राज्यमें विद्या और शिल्पकी बहुत कुछ उन्नति हुई है। इसी से लोग महाराजको "विद्याबन्धु" कहते हैं। बड़े बड़े पेड़ों तथा भारी भारी चीज़ोंके ढोनेके वास्ते यहां कलें तैयार हैं। लड़ाईके जहाज भी यहां बनते हैं। एक एक जहाजकी लम्बाई नौ नौ फुट होती है। ये सब जङ्गलहीमें तैयार होते और वहांसे कलों के द्वारा समुद्रमें पहुंचाये जाते हैं। महाराजकी आज्ञा पातेही पांचसौ बढ़ई और इञ्जीनियरोंने चार घण्टेके अन्दरही एक सुविशाल गाड़ी बना कर तैयार कर दी। यह गाड़ी जमीनसे तीन इञ्च ऊंची, प्रायः सात फुट लम्बी और चार फुट चौड़ी थी। देखने में बुरी न थी। इसमें बाईस पहिये लगे थे। इसी गाड़ीके पहुँचने पर सबने "पोपलिम सेलिम" से आकाश गुञ्जा दिया था। यह गाड़ी जहां मैं पड़ा हुआ था वहीं मेरे बराबर रक्खी गई। अब मुश्किल यह आपड़ी कि यह मेरा भारी शरीर गाड़ी पर कैसे चढ़ाया जायगा। शेषमें उपाय निकल आया। एक एक फुट लम्बे खम्बे जमीनमें सीधे गाड़े गये। इनके सिरे पर एक एक चरखी (छोटा पहिया) लगाई गई। मेरे हाथ, पैर, गर्दन आदि तमाम शरीरमें बन्द बांधे गये। मजबूत डोरियोंका एक छोर तो चरखियों पर रहा और दूसरा आंकड़ों के द्वारा बन्दोंसे अटकाया गया। यह सब काम ठीक होजाने पर नौ सौ चुने हुए पहलवानोंने चरखियों परसे आई हुई डोरियोंको बड़े ज़ोरसे खेंचा। खेंचतेही मैं धरतीसे पांच इञ्च ऊपर उठ आया। गाड़ीको लोगोंने ठीक मेरे नीचे ठेल दिया। बस ज़रासी डोरी ढीली करतेही मैं गाड़ी पर जा पहुंचा। फिर मेरा सारा शरीर गाड़ीके साथ खूब मजबूतीसे बांध दिया गया। इस प्रकार कोई पौने तीन घण्टेमें मैं उस सुविशाल शकट पर लादा गया। ये सब बातें मुझे पीछे मालूम हुईं क्योंकि

जिस समय वह सब काण्ड रचे जाते थे मैं बेहोशीकी पुड़ियाके कारण बिलकुल बेसुध था। महाराजके बड़े बड़े डेढ़ हजार घोड़े गाड़ीमें जुते थे जिनकी ऊंचाई साढ़े चार चार इञ्च थी। यह कही चुका हूं कि जहां मैं था वहांसे राजधानी आध मील थी। सब ठीक ठाक होजाने पर गाड़ी अग्रसर हुई। गाड़ी चलनेके चार घण्टे बाद अकस्मात् एक छींक आई और मैं चौंक पड़ा तो देखा कि बीच राहमें गाड़ी खड़ी है और मैं उस पर लदा हूं। इन आश्चर्यमयी बातोंको देख मेरी अजब दशा थी। कुछ कल कांटा बिगड़ गया था इसीसे गाड़ी रुकीथी। मिस्तरी सब मरम्मतमें लगे थे। एक दिल्लगीकी बात सुनिये। जब गाड़ी रुकी तो दो तीन आदमियोंको यह देखनेका शौक हुआ कि मैं सोया हुआ कैसा मालूम होता हूं। वे लोग चुप चाप गाड़ी पर चढ़ आए और मेरे मुंहके सामने खड़े होगये। इनमेंसे एक महाराजका चौकीदार भी था। वह अपने डण्डेका सिरा मेरी बाई नाकमें घुसेड़ कर भाग गया। मैं बड़े जोरसे छींक कर जाग उठा। यह डण्डा नाकमें सींककी तरह जान पड़ा था। बस इसी सबबसे बीचहीमें मैं जाग पड़ा था। राजधानी पहुंचनेके तीन सप्ताह बाद यह भेद मुझे मालूम हुआथा। फिर गाड़ी चली। चलते चलते शाम होगई। रात भर रास्तेहीमें विश्राम किया। हिफाजतके लिये साथमें एक हजार सिपाही थे। पांचसौ हाथोंमें मशालें लिये और पांचसौ धनुष बाण चढ़ाए दोनों तरफ डटे थे। सूरज उगने पर फिर कूचका डङ्का बजा। दोपहरको हम सब ऐसी जगह जा पहुंचे जहांसे नगर कोट (शहर पनाह) का फाटक दो सौ गज दूर था। बस यहीं गाड़ी खड़ी हुई। स्वयं महाराज परिकर सहित मुझे देखनेके लिये यहां आये थे। महाराजने तो मेरी देह पर चढ़के मुझे देखना चाहा परन्तु मन्त्रियोंने विपदकी आशङ्का कर महाराजको ऐसा करनेसे रोक दिया।

जहां गाड़ी रुकी थी वहां एक पुराना विशाल मन्दिर था।

उस देशमें इससे बड़ा मकान और नहीं है। कई वर्ष पहले इस मन्दिरमें एक नरहत्या होगई थी। इसी लिये नगरनिवासियोंने इसे अपवित्र समझ कर छोड़ दिया है। अब उसमें पूजा पाठ नहीं होता योंहीं खाली पड़ा रहता है। इस समय यह धर्म्मशालाका काम देता है। इसी मन्दिरमें मेरे टिकनेकी व्यवस्था हुई। उत्तर ओरका सदर दरवाजा चार फुट ऊंचा और प्रायः दो फुट चौड़ा था। इस दरवाजेसे मैं मजेमें रेंग कर भीतर जासकता था। दरवाजेके दोनों तरफ दो छोटी छोटी खिड़कियां थीं जो धरतीसे छः इञ्चसे अधिक ऊंची न थीं।

कारीगरोंने बाईं ओरवाली खिड़कीके पास ९१ जञ्जीरें लगा रक्खीं थी। इन जञ्जीरोंकी लम्बाई तथा मुटाई लेडियोंकी घड़ी की चेनके बराबर थीं। इन्हीं जञ्जीरोंको इकट्ठी कर मेरा बायां पैर बांधा गया और उनमें छत्तीस ताले जड़ दिये गये। बड़ी सड़कको दूसरी तरफ मन्दिरसे बीस फुटके फासले पर एक गुम्बज था जिसकी ऊंचाई लग भग पांच फुटके होगी। महाराज पारिषद समेत उसी गुम्बज परसे मुझे देखने लगे। शहरके सिवा बाहरके लाखों आदमी तमाशा देखनेके लिये आये थे। एक हजार सिपाही हिफाजतके वास्ते मौजूद थे तिस पर भी सैसकड़ों आदमी सीढ़ी लगा कर मेरी देह पर चढते और कूदते थे। किसीकी कोई नहीं सुनता था। सब मेरे ऊपर गिरे पड़ते थे। लाचार हो महाराजको यह हुक्म जारी करना पड़ा कि जो कोई इस विराट पुरुष के पास जायगा उसे फांसी दी जायगी। जञ्जीरसे बांधनेके बाद और सब बन्धन काट दिये गये! यह जंजीर चार हाथ लम्बी थी। बस इसीसे मैं चार हाथ तक इधर उधर टहल सकता था। सिर्फ यही नहीं बल्कि टांग पसार कर मन्दिरके भीतर सो भी सकता था। क्योंकि दरवाजेसे चारही हाथ पर मैं था। मेरी तबीयत बहुत उदास थी। जी बहलानेके लिये जरा मैं खड़ा होगया।

ओर टहलने लगा। मेरा खड़ा होना और टहलना देख कर उन सबके आश्चर्यकी सीमा न थी।

चतुर्थ परिच्छेद।

खड़ा होकर मैं चारों ओर देखने लगा। अहा! क्या मनोहर दृश्य है! क्या रमणीय स्थान है! आंखें तृप्त नहीं होतीं—जी चाहता है निहारताही रहूँ। क्या अनोखी छटा है सारा देशही चमन सा खिला हुआ है। चौकोर खेतोंकी बहार फलकी क्यारियोंसे किसी तरह कम नहीं है। नाना प्रकारके वृक्षों की कुछ निरालीही शोभा है। सात फुटसे ऊंचे यहां वृक्षही नहीं हैं। मेरी बाईं तरफ राजधानी है—अहा कैसा सुन्दर नगर है! नगर क्या है—खासा थियेटरका परदा है। देखतेही मन मुग्ध हो जाता है।

शौचादिसे निबटनेके लिये तबीयत बेचैन थी। दो दिनसे निबटा नहीं। अब और रोक न सका। मन्दिरमें घुस गया और किवाड़ बन्द करके वहीं हलका हुआ। कहही चुका हूं कि जंजीर चार हाथ लम्बी थी इसलिये भीतर जानेमें कुछ कष्ट नहीं हुआ। ऐसी मैली कार्रवाई बस मैंने एकही दिनकी थी सो आशा है कि पाठकगण मेरी दशा विचार कर क्षमा करेंगे। फिर तो मैं खूब तड़के उठता और बाहरही निश्चिन्त होता। दो मेहतर उसी समय आकर साफ कर जाते थे। बस इस विषयको यहीं समाप्त करता हूं। पाठक! नाक भौंह मत सिकोड़िये तीव्र समालोचकों ही के लिये मैंने यह गीत गाया है।

शौचादिसे छुट्टी पाकर मैं बाहर निकल आया। इधर महाराज भी गुम्बदसे उतर चुकेथे। घोड़े पर चढ़के मेरी ओर आने लगे पर ईश्वरने बड़ी कुशलकी! यद्यपि घोड़ा सुशिक्षित था तथापि वह मेरे पर्व्वताकार शरीरको देख कर भड़का और अपने पिछले पैरोंसे खड़ा होगया। महाराज भी घोड़े पर चढ़ना जानते

थे इसलिये गिरे नहीं अपनी जगह पर डटे रहे। इतनेमें साईसों ने आकर घोड़ेकी बाग थामली। महाराज भी कुशलपूर्वक उतर पड़े। फिर खड़े होकर आश्चर्यकी दृष्टिसे मुझे देखने लगे लेकिन जहां तक जंजीरकी पहुंच थी महाराज उससे दूरही रहे। डरके मारे पास नहीं आए। महाराजने रसोईयोंसे भोजनादिकी सामग्री लानेके लिये कहा। वे लोग पहलेहीसे तय्यार थे हुक्म पातेही मद्य और मांससे लदे हुए छकड़े मेरे सामने लेआए। तुरतही मैंने सबको खाड़ा कर डाला। बीस छकड़े मांसके और दस शराबके थे। मांस तो मैं दो तीन कौरहीमें चाट गया—बाकी रही शराब सो एकही घूंटमें साफ होगई। महारानी अपने छोटे छोटे राजकुमार और कुमारियोंको लिये कुर्सियों पर अलग बैठी थीं। सङ्ग में शहरकी नामी नामी रईसोंकी स्त्रियां भी थीं। घोड़ा भड़कनेके बाद सब महाराजके निकट चली आईं। महाराजका रङ्ग जैतून सा, चेहरा सुन्दर मगर रोबीला बदन दुरुस्त दुरुस्त और गठीला था। और लोगोंकी अपेक्षा महाराज कुछ लम्बे थे। नाक नोकीली और आंखें रसीली थीं। उमर उनतीस बरससे कुछही कम होगी। महाराजको राजसिंहासन पर बैठे अभी सातही वर्ष हुएहैं। इसी बीचमें आपने बहुत कुछ नाम और यश पैदा कर लिया है। महाराजको भली भांति देखनेके लिये मैं जमीनमें लेट गया— करवट लेनेसे मेरा मुंह श्रीमान्‌के मुंहके ठीक सामने होगया। वे मुझसे छः हाथके फासले पर थे। महाराजको कई बार हाथमें लेना पड़ा था। इस वास्ते आपका चित्र हृदयमें चित्रित है। महाराजकी पोशाक सादी और सुहावनी थी लेकिन मस्तक पर रत्न जड़ित स्वर्ण मुकुट और हाथमें तीन इञ्च लम्बी तलवार थी। म्यान और मूठ दोनों ही सोनेकी थीं। और उनमें हीरे जड़े थे। जितने लोग वहां थे सब जर्कबर्क थे—एकसे एककी पोशाक बढ़ कर थी। उस समय वहांकी भूमि बनारसी कमखाब मालूम पड़ती थी और महाराज अपने दलबल समेत उसके बेल बूटे।



नं० ५

एकको हाथमें उठालिया और उसके सामने जोरसे
मुँह बाया मानो उसे जीताही निगल जाउंगा।

पृष्ठ १५

महाराज मुझसे बोलते और मैं महाराजसे किन्तु कोई किसीको बात नहीं समझता था। महाराजके साथ वकील और पुरोहित भी थे जिन्हें मैंने उनके रङ्ग ढङ्गसे पहचान लिया था। महाराजने उन्हें भी मुझसे बात करनेके लिये आज्ञा दी। वह बिचारे बोले भी बहुत कुछ। मैंने भी कई देशकी भाषाओंमें जवाब दिया परन्तु फल कुछ हुआ नहीं। कोई किसीकी बोली समझ नहीं सकता था। दो घण्टेके अनन्तर महाराजने समाज समेत प्रस्थान किया। तमाशेके लिये अकसर लोग मुझे छेड़ते और दिक करतेथे। महा-राजकी आज्ञासे भीड़ भाड़ हटाने तथा हिफाजतके लिये कड़ा पहरा बैठा। वास्तवमें वहांके आदमी बड़ेही शैतान थे। एक दिन जब मैं द्वार पर बैठा था कई आदमी लगे मुझ पर तीर च-लाने। एक तीर तो बांई आंखके पाससे निकल गया। बड़ी कुशल हुई, नहीं तो आंखही फूट जाती। सिपाहियोंने तीर चलानेवालोंमेंसे छः को पकड़ लिया और उनको कुछ सजा न कर उन्हें बांध कर मेरे हवाले कर दिया। मैंने पांचको जेबमें रख कर एकको हाथमें उठा लिया और उसके सामने जोरसे मुंह बाया मानो उसे जीताही निगल जाऊंगा। उस बिचारेके तो प्राण सूख ही गये लेकिन दर्शकोंका भी डरके मारे अजब हाल था। जब मैंने खलीतेसे छुरी निकाली तो सबके सब सन्नाटेमें आगये और वह बिचारा तो अपनी जानसे हाथ धोकर बड़े जोरसे रो उठा। मैंने छुरीसे उसका बन्धन काट कर उसे जमीन पर रख दिया। वह जान लेकर भागा। शेष पांचके साथ भी मैंने यही बर्त्ताव किया। मेरी इस कार्य्यवाहीसे सब लोग बहुतही प्रसन्न हुए। महाराज तक यह खबर पहुंची। वहां मेरी बड़ी प्रशंसा हुई। इससे मुझे लाभ भी हुआ जिसका हाल आगे चल कर मालूम होगा।

रातको मुझे बहुत कष्ट होता था क्योंकि बिछानेके लिये कुछ न था। योंही गच पर पड़ रहता था। पन्द्रह दिन तक यही दशा रही। आखिर महाराजने बिस्तरके लिये प्रबन्ध कर दिया।

छः सौ बिछौने गाड़ी पर लद कर आपहुंचे। दर्जियोंने डेढ़सौ बिछौनेको एक साथ मिला कर सी डाला: इस तरहके चार बनाये गये। फिर इन चारोंको इकट्ठा करनेसे एक गद्दा तैयार हुआ। खैर, इस गद्देसे कुछ आराम मिला। चादर कम्बल, तकिये, मसहरी वगैरह भी इसी नापसे बनाई गईं। इस प्रकारसे रातका कष्ट दूर हुआ।

मेरे यहां पहुंचनेकी खबर देश भरमें फैल गई। धनी, दरिद्र, छोटे बड़े, आलसी, शौकीन—सब प्रकारके लोग घर बार छोड़ कर मुझे देखनेके लिये चारों ओरसे आने लगे। आस पासके गांव सब खाली होगये। यदि महाराज नई नई कड़ी आज्ञायें जारी करके इस भेड़ियाधसानको न रोकते तो गृहस्थी तथा खेती बारीके काम बिलकुल बन्द होजाते। महाराजने यह नियम कर दिया कि जो लोग देख चुके हैं वे अपने अपने घर लौट जांय और बिना सरकारी हुक्मके मन्दिरके आस पास (एकसौ हाथ तक) फिर न आवें। अगर कोई आवेगा तो उसे प्राण दण्ड दिया जायगा। हुक्म लेनेमें रुपये लगते थे सो राज्यके सिकत्तर साहबको खूब रुपये मिलने लगे।

इस बीचमें महाराजके यहां कई सभायें बैठीं। इन सब सभाओंका मुख्य उद्देश्य मैंही था। मेरे साथ अब कैसा व्यवहार करना चाहिये इत्यादि बातोंहीका विचार सभासद लोग आपसमें करते थे। वहांका एक भलामानस मुझे बहुत चाहता था। वह राजदरबारकी गुप्त बातें बहुधा मुझसे कह जाता था। न जाने वह कैसे इन सब गुप्त भेदोंका पता लगा लेता था। पीछे उसीसे मालूम हुआ कि सभावाले इस फिकरमें पड़े हैं कि अगर कहीं मैं जंजीर तोड़ कर निकल जाऊं तो बड़ा अनर्थ होगा। किसीको यही चिन्ता थी कि अगर मैं कुछ दिन वहां रह गया तो सारा देश दुर्भिक्षके चंगुलमें जरूर फंस जायगा। मेरी खुराक जुटानेमें सरकारका बहुत कुछ खर्च पड़ता है। थोड़ेही दिनोंमें खजाना खाली

होजायगा। इसलिये मुझ आफतको टालनेके लिये सभासदों ने नये नये ढङ्ग निकाले किसीने अन्न बिना मारना बताया और किसीने विषैले तीरोंसे मेरा कामही तमाम करनेके लिये सलाहदी। परन्तु दूरदर्शी लोगोंने कहा नहीं, ऐसा करनेसे महा अनिष्ट होगा। जब इतनी बड़ी लाश सड़ेगी तो समूचा देश दुर्गन्धिसे भर जा-यगा—फिर महामारीको देशका सत्यानाश करनेमें कितनी देर लगेगी? जिस समय सभामें सब तर्क वितर्क होरहे थे दो सिपा-हियोंने आकर महाराजसे मेरी बड़ी बड़ाईकी और उन छः आदमियोंकी कथा जिन्हें धमका कर मैंने छोड़ दिया था कही। महाराज तथा सभासदगण मेरी इस कार्यवाहीको सुन बहुतही खुश हुए। उसी समय सर्व सम्मतिसे निश्चय हुआ कि राजधानीके समीप नौ सौ गजके भीतर जितने ग्राम हैं वे सब 'नर पर्व्वत' (मेरे) के खाने पीनेकी सब चीजें नित्य सबेरे जुटाया करें और इन सब चीजोंका दाम खजानेसे मिला करेगा। 'नर पर्व्वत' के काम काजके लिये छः सौ नौकर चाकर रखे जांय। इन लोगों की तलब भी खजानेसे मिला करे तथा इनके रहनेके लिये मन्दिर के दरवाजेके निकटही घर बने। पोशाक तैयार करनेके वास्ते तीनसौ दर्जी तथा यहांकी भाषा सिखानेके लिये छः अच्छे पण्डित नियत हों। सरकारी घुड़सवार तथा सिपाही सब अपनेको ढीठ बनानेके निमित्त सदा। "नर पर्व्वत" के निकट जाकर अपनी अपनी कसरत दिखाया करें। महाराजकी यह सब आज्ञायें बहुत जल्द काममें लाई गईं। प्रायः तीन सप्ताहके भीतरही मैंने वहां की भाषा बहुत कुछ सीख ली। बीच बीचमें महाराज भी पधारते और मुझे भाषा सिखानेमें पण्डितोंकी सहायता करते थे। अब मैं महाराजसे बात चीत भी करने लगा। मैं बराबर विनय पूर्वक स्वाधीनताके लिये महाराजसे प्रार्थना करता तो वह कहते "अभी सब्र करो; मन्त्रियोंकी सम्मति बिना मैं कुछ नहीं कह सकता। अच्छा अभी तुम अपने चाल चलनसे सबको खुश करो पीछे देखा जायगा।"

पञ्चम परिच्छेद।

एक दिन महाराजने कहा "अगर मेरे कर्म्मचारी तुम्हारी तलाशी लें तो तुम्हें बुरा न मानना चाहिये। तुम्हारे जैसे विराट पुरुषके पास अगर कोई भयानक हथियार हो तो पलमें प्रलय हो सकती है। सो इस काममें किसी प्रकारका उजर मत करना और यह तुम्हारी सहायताके बिना हो भी नहीं सकता है। तुम्हारी दयालुताका बहुत कुछ नाम फैला है इसीसे मैं अपने कर्म्मचारियों की जान तुम्हारे हाथ सौंपता हूं।" महाराजके मनका भाव समझ कर मैंने कहा "मुझे कुछ भी उजर नहीं है। आप अभी मेरी तलाशी ले लीजिये मैं तैयार हूं।" महाराज बोले "मैं नहीं ले सकता। इस राज्यके नियमानुसार मेरे दो कर्म्मचारीही तलाशी लेंगे। जो जो वस्तु तुम्हारे पास मिलेंगी वह सब जब तुम यहांसे जाओगे तब लौटा दी जायगी। अगर दाम चाहोगे तो उन सब चीजोंका उचित दाम तुम्हें मिलेगा।" आखिर दो राजकर्म्मचारी मेरे पास आए। मैं उन दोनोंको हाथमें लेकर क्रमसे जेबोंमें उतारता गया। उन दोनोंने भली भांति अन्वेषण किया। जब काम होगया तब उनको जमीन पर रख दिया। जितनी चीजें मिलीं थीं सबकी सूची बना कर महाराजको रिपोर्ट सुनाई गई। उस रिपोर्टका अविकल अनुवाद यह है—

"हम लोगोंने 'नर पर्व्वत' के कपड़ोंका पूर्ण रूपसे अन्वेषण किया। दाहनी ओरकी पाकेटमें मोटे कपड़ेका एक टुकड़ा मिला जो आमानूके दरबार हालकी जाजमके बराबर है। बाईं ओरकी पाकेटमें चान्दीका एक सन्दूक था। जिसका ढकना भी चान्दीही का है। यह बहुत भारी है। इसे हम उठा न सके। इसे खोल कर देखनेकी इच्छा हुई। जब खुला तो देखा इसमें कुछ गर्दसी भरी हुई है जिसके उड़तेही हम लोग छींकते छींकते बेदम हो गये। हममेंसे एक उस सन्दूकमें घुसा। वह घुटने तक उस गर्द

में डूब गया। वेष्टकोट की दाहिनी तरफवाले खलीतेमें उजली मगर पतली चीजका एक बड़ासा पुलन्दा देखा जो मजबूत रस्सीसे बंधा हुआ था। उसमें क्या है सो मालूम नहीं। यह पुलन्दा तीन पुर्सा लम्बा है। इस पर हमारी हथेलीके समान काले काले दाग थे जो सम्भवतः अक्षर होंगे। बांयें खलीतेमें एक प्रकार का एक यन्त्र पाया जिसके एक तरफ बीस बड़ी बड़ी खूटियां गड़ीं हैं। जान पड़ता है 'नर पर्व्वत' इस यन्त्रसे अपना सिर झाड़ता है। वह हमारी बोली जल्दी नहीं समझ सकता था इसलिये हम बहुत सी बातें पूछ न सके। पटलूनकी दक्षिण ओरवाली पाकेटमें लोहे की एक पोली लाट देखी जो एक पुर्सा लम्बी है। यह लकड़ीके एक बड़े कुन्देमें जड़ीहै। लाटके एक तरफ लोहेकी अनूठी मूर्तियां बनी हुई हैं। यह क्या है सो हम लोग नहीं जान सके। दूसरी जेबमें भी ऐसीही एक चीज है। दाहिनी ओरवाली छोटी पाकेट में बहुतसे गोल मगर चपटे, छोटे, बड़े, उजले और लाल धातुके टुकड़े थे। जो उजले थे सो चान्दीके मालूम पड़े लेकिन वे इतने भारी थे कि हम दोनों मिल कर भी उन्हें उठा न सके। बाईं जेबमें दो काले काले अनगढ़ खम्भे थे। जब जेबके भीतर खड़े थे तो बड़ी कठिनाईसे उनके सिरे तक पहुँच सकेथे। एक तो खोलमें बन्द है और दूसरेके ऊपरवाले छोर पर कुछ गोलसी उजली चीज मालूम पड़ी जो हमारे सिरसे दूनी है। इन दोनोंके भीतर इस्पात के बड़े बड़े मोटे पत्तर बन्द हैं। हमारे कहनेसे 'नर पर्व्वत' ने खोल कर उन दोनों चीजोंको दिखलाया और कहा कि एक तो बाल बनानेकी कल है और दूसरी मांस काटनेकी। दो खलीते और थे जिनमें हम लोग नहीं गये। बाहरहीसे देखा पतलूनके ऊपरी भागमें दाईं ओरके खोसेसे चान्दीकी एक जंजीर लटकती है। हमारे कहनेसे उसने जंजीरको बाहर निकाला। देखतेही हम लोग भौचकसे रह गये। देखा जञ्जीरके निचले सिरेसे एक गोल पदार्थ बंधा हुआ है। जिसके एक तरफ चान्दी है और दूसरी

तरफ है स्वच्छ पार दर्शक पदार्थ। जिधर स्वच्छ है उधरही अनूठे अनूठे अचर लिखे हैं। उन अचरोंको छूना चाहा पर छू न सके, स्वच्छ पदार्थसे उंगली टकरा कर रह गई। नर पर्व्वतने उस अद्भुत पदार्थको हमारे कानोंसे लगाया तो हमारे अचरजका ठिकाना न रहा। उसमेंसे टक् टक् शब्द निकलता है। जैसे फुहारेसे जल बराबर गिरा करता है वैसेही उसमेंसे भी आवाज निकला करती है। हम लोग अनुमान करते हैं कि यह एक विचित्र जीव है अथवा नर पर्व्वतका इष्ट देवता। यह पिछली बातही मुझे सत्य प्रतीत होती है क्योंकि नर पर्व्वत इस यन्त्रकी आज्ञा बिना कोई कामही नहीं करता है। यह पदार्थ उसे दिन रातकी सूचना देता है। बायें खोसेसे एक जाल निकला। मछली पकड़नेके जाल जैसे होते हैं यह भी वैसाही है। लेकिन यह बटुएकी तरह खुलता और बन्द होता है। इसमें सोनेके बड़े बड़े बहुतसे सिक्के हैं। यदि वास्तवमें यह सोना है तो इसका मूल्य अपरिमित होगा।

महाराजकी आज्ञानुसार हमने नरपर्व्वतके खीसोंका भली भांति अनुसन्धान किया। जिन चीजोंका वर्णन ऊपर कर चुके हैं। उनके अतिरिक्त एक वस्तु और देखी। उसकी कमरसे चमड़ेकी एक पेटी लपटी हुई है जिससे एक लम्बी तलवार बाईं ओर लटकती है। यह तलवार पचीस इञ्च लम्बी है। दाहिनी ओर दो खण्डका एक बेग है। इसके एक एक खण्डमें महाराजके तीन तीन आदमी मजेमें अट सकते हैं। एक खण्डमें भारी भारी बहुतसी गोलियां हैं और दूसरेमें एक तरहका काला अन्न। लेकिन यह भारी नहीं है। पचास दानोंको एक बारही मुट्ठीमें उठा लियाथा।

नर पर्व्वतके पास जो कुछ चीजें मिलीं या देखीं उनकी यह पूरी सूची है। नर पर्व्वतने हमारे साथ अच्छा बर्ताव किया और महाराजके प्रति विशेष राजभक्ति दिखलाई है। महाराजके शुभ शासन समयके नवासिवें चन्द्रके चौथे दिन यह रिपोर्ट लिखी गई।

क्रेफलिन फ्रेलक

मार्सी फ्रेलक।"

रिपोर्ट सुन कर महाराजने मुख्य चीजें दाखिल करनेके लिये मुझसे अनुरोध किया। जिन जिन पदार्थोंको देख कर वे चमत्कृत हुए थे पहले मैं उन्हींका वर्णन करता हूं। दरबार हालकी जाजमसे जिसकी समताकी गई थी वह था मेरा रूमाल। मेरी पिस्तौलहीकी बराबरी लोहेकी पोली लाटसे कीगई थी। सुंघनी की डिबियाहीने सन्दूककी इज्जत पाईथी। बिचारी घड़ी तो साक्षात् देवताही बन बैठी थी।

महाराजने पहले तलवार दिखलानेके लिये कहा। मैंने म्यान समेत तलवार निकाली। महाराजकी आज्ञासे उसी समय चुनी हुई तीन हजार फौज धनुष बाण चढ़ाये मेरे चारों तरफ मगर कुछ दूर डट गई। मेरी दृष्टि तो महाराजकी ओर लगी थी इस लिये उस सुविशाल सैन्यदलको न देख सका। इसकी खबर मुझे पीछे मिली, अस्तु। फिर महाराजने म्यानसे तलवार निकालनेके लिये कहा। मैंने वही किया। यद्यपि समुद्रके जलमें भीगने के कारण कहीं कहीं उस पर मोरचा लग गया था तथापि ज्यादे हिस्सा उसका साफ था। मैं हाथमें लेकर उसे इधर उधर घुमाने लगा। सूर्य्यकी किरण पड़तेही वह बिजलीसी चमक गई। सब दर्शकोंकी आंखें बन्द होगईं, डरके मारे होश उड़ गये। महाराजने म्यानमें रख कर जमीन पर धीरेसे धर देनेके लिये आज्ञा दी। मैंने वही किया। फिर पिस्तौलकी बारी आई। बारूद चमड़ेके तोशदानमें थी इस वास्ते वह भीगनेसे बच गई थी। मैंने पिस्तौलमें केवल बारूद भर कर एक आवाजकी। जिससे सैंकड़ों बेहोश होगये। महाराज भी जरा चौंक उठे थे। फिर दोनों पिस्तौल और तोशदान तलवारके साथही रखदिये। महाराजसे यह भी निवेदन कर दिया कि यह बारूद बहुत जोखिमकी चीज है। इसे आगसे बहुत बचाना चाहिये नहीं तो सारा महल एक छनमें उड़ जायगा। महाराज घड़ी देखनेके वास्ते बहुत बेचैन थे। आखिर मैंने घड़ी निकाली। दो आदमी उसे उठा कर महाराज

लेपास लेगये। घड़ी देखतेही उनके आश्चर्य्यका वारापार न था। कांटेकी चाल तथा लगातार टक् टक् शब्दने तो उन्हें आश्चर्य्यके समुद्रमें डुबा दिया। घड़ीके विषयमें पण्डितोंसे पूछा गया तो किसीने जानवर, किसीने देवता और किसीने क्या बताया सो मेरी समझमें न आया। इसके उपरान्त मैंने रुपये, पैसे, अशर्फियां, बटुआ, छुरी, छुरा, कंघी, सुंघनीकीडिबिया, रुमाल और रोजनामचा महाराजके सामने रख दिया। तलवार, पिस्तौल और तोशदान महाराजने गाड़ी पर लदवा कर खजानेमें भेज दिये। बाकी चीजें मुझे वापस मिलीं।

एक गुप्त पाकिट और थी जिसकी तलाशी जान बूझ कर मैंने होने न दी। इस पाकिटमें एक जोड़ा चश्मा, जेबी दूरबीन तथा और भी बहुतसी कामकी चीजें थीं। शायद लोग तोड़ फोड़ दें बस इसी ख्यालसे मैंने इन सब चीजोंको गुप्तही रक्खा।

षष्ट परिच्छेद।

मेरी नम्रता और सज्जनताके कारण महाराज मुझसे बहुतही प्रसन्न रहते थे। राज दरबारके जितने लोग थे सभी मुझसे सन्तुष्ट थे। प्रजागणका तो मैं खिलौनाही बन गया था। इन सब कारणोंसे मुझे अपने छुटकारेकी बहुत कुछ आशा होने लगी। मैं भी सबको खुश रखनेकी कोशिश करता था। चिन्तासे क्रमश: मेरा भय भागने लगा। सब ढीठ होचले। पांच पांच छः छः आदमी टोली बांध कर आते और मेरी देह पर उछलते कूदते और नाचते। यहां तक सब निडर होगये कि छोटे छोटे लड़के और लड़कियां मेरे बालोंमें लुका चोरी खेलने लगी। मैं चुपचाप पड़ा पड़ा देखता था। अब मैं इनकी भाषा भी अच्छी तरह बोलने और समझने लगा था। एक दिन महाराजने अपने यहांके खेल तमाशे दिखलाये। वस्तुत: ऐसी कुशलता—ऐसी निपुणता—ऐसी चतुरता मैंने कहीं नहीं देखी! ऐसे तो सभी तमाशे अच्छे

थे लेकिन "रज्जू-नृत्य" यानी डोरी परका नाच मुझे बहुतही भाया। एक फुट ऊंचे दो खम्भे (नहीं खूंटी) जमीनमें गाड़ कर उनमें दो फुट लम्बा उजला धागा बांध दिया जाता है। बस इसी धागे परके नाचका नामहै "रज्जू-नृत्य"। इस नाचका पूरा विवरण मैं सुनाता हूं आशा है पाठकगण ध्यानसे सुनेंगे।

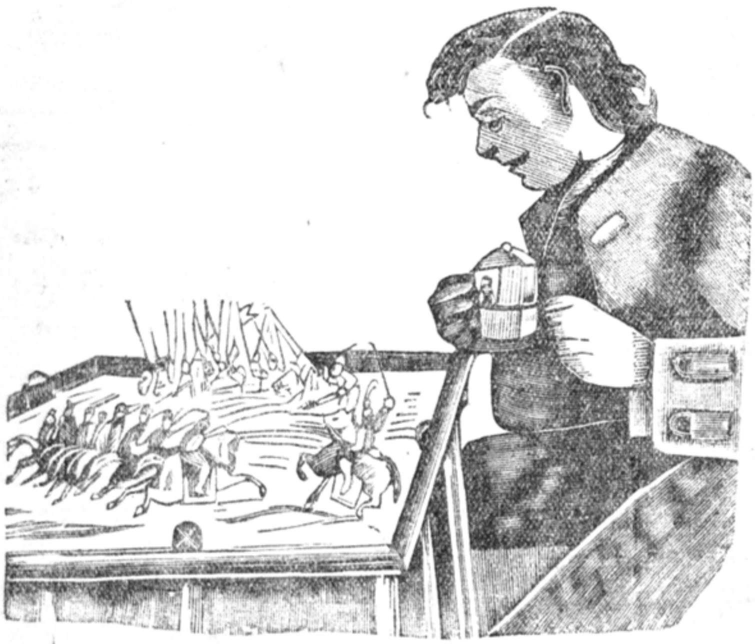
जो भारी भारी कामोंके अभिलाषी हैं अथवा जो महाराजके कृपा पात्र बना चाहते हैं वही यह नाच नाचते हैं। उच्च पद पानेके लिये बस इसी रज्जू-नृत्यमें पटु होना चाहिये—विद्या या कुलीनताकी कुछ आवश्यकता नहीं है। यह नाच बालेपनहीसे सिखाया जाता है। किसी उच्च पदस्थ राजकर्मचारीके मरने वा पदच्युत होने पर पांच छः उम्मेदवार अपना अपना नाच दरबारको दिखाते हैं। जो बढ़िया नाचता या जो बिना गिरे पड़े खूब कूदता है वही उस पदको पाता है। राज्यके प्रधान प्रधान मन्त्री भी अकसर इसी प्रकार नृत्य कर महाराजको जता देते हैं कि अभी तक वह अपनी निपुणताको नहीं भूले हैं। खजानचीको सब अफसरोंसे कमसे काम एक इञ्च अधिक कूदना पड़ता है। मैंने अपनी आंखोंसे उसको डोरी पर तलवार रख कर कला-बाजी करते देखा है। इस नाचमें खजानचीके बाद महाराजके प्राइवेट सिकत्तर मेरे परममित्र रेलड्रे सलहीका नम्बर था। और बाकी सब समान थे।

इन खेलोंमें अकसर आदमी मरते भी हैं। सरकारी कागजों में अनेक दुर्घटनाओंका उल्लेख है। मेरे सामनेही दो तीन उम्मी-दवारोंकी हड्डियां टूटी थीं। बड़े बड़े अफसर लोग जब नाचनेके लिये खड़े किये जाते हैं तभी दुर्घटनाकी विशेष सम्भावना रहती है क्योंकि ये लोग ईर्षावश बड़ाई पानेके लिये जान पर खेल जाते हैं। बस इसीसे इनकी जान भी जाती है। और गिरना पड़ना तो एक मामूली बात है। सुननेमें आया कि दो वर्ष पहले खजा-नची साहेब नाचते नाचते गिर पड़े सौभाग्यसे नीचे महाराजकी

गद्दी बिछी हुई थी इसीसे बचभी गये नहीं तो उसी क्षण उनका काम तमाम होजाता।

एक खेल और है जो महाराज, महारानी और प्रधान मन्त्री के सिवाय दूसरा कोई नहीं देख सकता—सोभी बराबर नहीं कभी कभी किसी खास मौके पर होता है। महाराज छः छः इञ्चके तीन पतले रेशमी डोरे मेज पर रख देते हैं जिनमें एकतो नीला, दूसरा लाल, और तीसरा हरा होता है। जो बाजी मार लेता है उसी को महाराज सन्तुष्ट होकर ये डोरे इनामके बतौर देते हैं। राज-महलके बड़े कमरेमें यह तमाशा होता है। खेलनेवालोंको अपना अपना कौशल दिखलाना पड़ता है। रज्जू-नृत्यसे इसका ढङ्ग निरालाही है। ऐसा कौशल तो पृथ्वी पर मैंने कहीं नहीं देखा। महाराज छड़ीको सामने तान कर खड़े होते हैं और खेलनेवाले सब एक एक करके उस छड़ीको उछल कर लांघ जाते हैं। कभी उसके नीचेसे निकल जाते और कभी इधर आते कभी उधर जाते हैं। महाराज भी छड़ीको कभी ऊपर उठाते और कभी नीचे गिरातेहैं। बस इसी छड़ीके इशारे पर खेल होता है। कभी कभी छड़ीका एक सिरा महाराजके हाथमें और कभी दोनोंही मन्त्रीके हाथमें रहते हैं। जो इस उछल कूदमें अव्वल होता उसे नीला, दूसरा होता उसे लाल और तीसरा होता उसे हरा डोरा मिलता है। ये डोरे करधनीकी तरह कमरमें पहने जाते हैं। ऐसे यहां बहुत कम लोग हैं जिनकी कमरमें ऐसी एक भी करधनी न हो।

फौजी तथा महाराजके अस्तबलके घोड़े रोज मेरे पास लाये जाते थे। आते आते वे सब ढीठ होगये। अब मुझे देख कर वे नहीं भड़काते थे। अब वे मजेमें पैरके पास चले आते थे। मैं अपना हाथ धरती पर रख देता तो सवार लोग बड़ी फुर्तीसे घोड़े समेत उसे फांद जाते। एक दफे एक शिकारी बड़ी चालाकीसे मेरे पैर को घोड़े समेत फांद गया था। लेकिन ताज्जुब तो यह है कि उस समय मेरे पैरोंमें जूते भी थे। एक दिन मैंने एक अनूठे खेलसे



रूमाल पर कृत्रिम युद्ध।

महाराजको खूब ही प्रसन्न किया था। मैंने बहुतसे खूंटे मंगवाये। दो दो फुट लम्बे नौ खूटे जमीनमें गाड़ दिये। चौकोर जमीनके चारों ओर ये खूंटे गाड़े गये थे। इसका क्षेत्र फल था अढ़ाई वर्ग फुट। फिर खूंटोंके ऊपर चारों तरफ चार डण्डे मजबूतीसे बांध दिये गये। उन्हीं खूंटोंसे अपने रूमालको खूब कसकर बांध दिय फिर चारों ओर खेंचनेसे रूमाल बिलकुल तन गया तनकभी सिकुड़न न रही। जान लेना चाहिये कि यह रूमाल ऊपरवाले चारों डण्डोंसे पांच इञ्च नीचेकी ओर बांधा था बस इसीसे डण्डे मुंडेरेका काम देते थे। जब सब ठीक ठाक होगया तब मैंने महाराजसे आज्ञा लेकर चौबीस चुने हुए सवारोंको उनके अफसर सहित उस रूमाल पर डाल कर कवायद करनेके लिये कह दिया। यह सब अस्त्र शस्त्रसे सुसज्जित थे। उस रूमाल पर दो हिस्से होकर वह सब अन्तिम युद्ध करने लगे। खूब घमसानकी लड़ाई हुई। महाराज इस खेलसे बहुतही प्रसन्न हुए। कई रोज यह तमाशा हुआ था। ईश्वरकी कृपासे इस खेलमें कोई दुर्घटना नहीं हुई। केवल एक दिन एक भड़कीले घोड़ेकी टापसे रूमालमें छेद होगया था परन्तु कुछ हानि नहीं हुई।

दो तीन दिनके बाद एक जासूसने आकर महाराजसे निवेदन किया "कृपानिधान! कई आदमी घोड़े पर चढ़े जारहे थे अकस्मात् उनकी दृष्टि एक काली गोल चीज पर जापड़ी जिसका घेरा महाराजके शयनगृहके समान तथा ऊंचाई एक पुर्सा है। पहले तो सबने समझा कि कोई जीव जन्तु है पर पीछे मालूम हुआ कि निर्जीव पदार्थ है क्योंकि आदमियोंको देखकर वह हिला तक नहीं। फिर एकके ऊपर एक चढ़के उसके सिरे तक सब पहुंचे। ऊपरी भागके भीतर धंस जानेसे मालूम हुआ कि वह भीतरसे पोला है। तब सबने अनुमान किया कि हो नहो यह "नर पर्वत" ही की कोई चीज है क्योंकि जहां वह पकड़ा गया था वहीं वह भी पड़ी है। महाराजकी अगर इच्छा हो तो वह सब उसे यहां

ला सकते हैं।" मैंने उसके मंगवानेके लिये महाराजसे अनुरोध किया। उन्होंने भी आज्ञा देदी। आखिर वह अनूठी चीज आ पहुंची, सहजमें नहीं—पांच घोड़े उसे खैंचकर लाये थे। देखा तो मालूम हुआ कि मेरी टोपी है। समुद्रमें तैरनेके समय मैंने इसे डोरीसे बांध लिया था पर फिर यह कहां गिर पड़ी सो मालूम नहीं। टोपी आई सही लेकिन बिलकुल छिन्न भिन्न थी। क्योंकि एक तो घसीट कर लाई गई दूसरे छेद करके उसमें डोरी बांधी गई थी।

इस घटनाके दो दिन बाद महाराजने एक और विचित्र तमाशा देखा। महाराज मुझसे बोले " तुमसे जहां तक होसके पांव फैला कर सीधे खड़े होजाव। मेरी कुछ फौज जो यहांहै कायदे के साथ तुम्हारे दोनों पैरोंके बीचसे निकल जायगी।" मैं पांव फैलाकर खड़ा हुआ। घुड़सवार सोलह २ और पैदल चौबीस चौबीसकी पांती बांध कर ध्वजा पताका उड़ाते डङ्का पीटते मेरे पैरोंके बीचसे निकल गये। कुल पलटन चार हजार थी। महाराजका हुक्म था कि जानेके समय कोई ऊपर न देखे परन्तु दो एक मन चले और रसिक सिपाहियोंने इस हुक्मको ताक पर रखदिया था। पुराना होनेके कारण मेरा पतलून कुछ फट गया था। सो ज्योंही ये लोग पैरोंके बीचोंबीच पहुंचे त्योंहीं ऊपर देख कर अचम्भेके साथ हंस पड़े।

एक बहुत जरूरी बात कहनेको भूलही गया था। वह यह कि जिस देशकी कथा मैं कह रहा हूं अथवा यों कहिये कि जहां मैं आ फंसा हूं उसका नाम " लिलीपट " है और वहांके निवासी मुझे " नर पर्व्वत " कहते हैं।

मैंने अपनी स्वाधीनताके लिये महाराजकी सेवामें इतने प्रार्थना पत्र भेजे कि उनका भी चित्त पिघल उठा। आखिर एक सभा करकै सबकी राय लीगई। सबने मेरेही पक्षमें रायदी। केवल एक आदमी जिसका नाम "स्कायरेशबलगुलाम" था अकारणही

मेरा शत्रु, परम शत्रु, बज्र शत्रु बन बैठा। यह बल गुलाम समुद्री सेनापतिके सिवा राजमन्त्री भी था। महाराज इसे बहुत चाहते थे। इसीसे यह उनका विश्वास भाजन भी था। यह अपने कामों में बड़ा पक्का लेकिन चेहरा रूखा था। बस इसी दुष्ट बल गुलाम ने न जाने क्यों मेरे विरुद्ध राय देदी परन्तु कुछ हुआ नहीं क्योंकि इसे छोड़ कर सभी सभासद मेरे पक्षमें थे। अतएव महाराजने भी मेरे अनुकूलही सम्मति प्रगटकी। लाचार हो बलगुलामको भी सबकी रायमें राय मिलानी पड़ी परन्तु सभाके मन्तव्योंको स्वयं लिखनेके लिये उसने बड़ा हठ किया। आखिर यह भार उसीके सिर सौंपा गया। बलगुलामने भी आज्ञा पत्र लिखकर तैयार किया। कई माननीय पुरुषोंके सङ्ग वह स्वयं आज्ञापत्र लेकर मेरे पास आया। मैंने ध्यानसे आज्ञापत्रको सुना और उसकी शर्तों को मञ्जूर किया। फिर बलगुलामके आज्ञानुसार पहले तो अपने देशकी प्रणालीसे पुन: उनकी देशप्रणालीसे मुझे शपथ करनी पड़ी कि मैं इन नियमोंको अवश्य पालूंगा। जरा उन लोगोंके कसम खानेको रीति सुनिये। बांयें हाथसे दायां पैर थाम कर दाहिने हाथकी बिचली उङ्गलीसे ब्रह्माण्ड और अंगूठेसे दाहिने कान का ऊपरी भाग कसम खानेके समय छूना पड़ता है। मुझे भी यह सब कसरत करनी पड़ी थी। पाठकोंके अवलोकनार्थ मैं उस आज्ञापत्रका अनुवाद किये देता हूं।

लिलीपटके महाप्राक्रान्तशाली महाराज गलबष्टो ममारिन एभलेमगर्डिलोशेफिन मुल्ली उल्ली गुइने जिनके साम्राज्यकी परिधि प्राय: बारह मील और विस्तति भूमण्डलकी सीमा पर्य्यन्त है—जिनके युगल चरण पृथ्वीके केन्द्रको पवित्र करते हैं—जिनका मस्तक सूर्य्यमण्डलको स्पर्श करता है—जिनके सिर हिलातेही संसारके समस्त राजा कांप जाते हैं—जो दुष्टोंका दमन और शिष्टोंका सत्कार करते —जो सब महाराजोंके महाराज जो मनुष्य कोटिमें सब से ऊंचे—जो बसन्त ऋतुसे मनोहर, ग्रीष्मसे सुखदायी, शरदसे

फलदायी और शीतकालसे भयदायी हैं—नर पर्व्वतको जो हमारी स्वर्गीय भूमिमें कहींसे आपड़ा है, शपथ देकर निम्नलिखित नियमावली पालन करनेके निमित्त बाध्य किया है।

(१) 'नर पर्व्वत' को हमारी आज्ञाके बिना कदापि इस राज्य के बाहर कहीं नहीं जाना चाहिये।

(२) 'नर पर्व्वत' को हमारी प्रकाश्य अनुमतिके बिना कदापि राजधानीके भीतर आनेका साहस न करना चाहिये। यदि उसके आनेकी आवश्यकता समझी जायगी तो दो घण्टे पहले नगर निवासियोंको सूचना देदी जायगी कि आज नर पर्व्वत शहरमें आता है कोई आदमी घरसे बाहर न निकले।

(३) यह नर पर्व्वत केवल बड़ी बड़ी सड़कोंही पर घूम सकता है। मैदानमें जहां मवेशी चरते हैं या खेतोंमें, यह न टहल सकता न सो सकता है।

(४) नर पर्व्वतको बड़ी बड़ी सड़कों पर भी खूब सचेत होकर चलना चाहिये जिसमें हमारी प्यारी प्रजा या उसके घोड़े, गाड़ियां आदि पैरके नीचे न कुचल जायें। इसके अतिरिक्त हमारी प्रजाओंमेंसे किसीको भी उसकी मरजीके बिना हाथमें उठाना न चाहिये।

(५) अगर कहीं कोई जरूरी खबर जल्द भेजनेकी दरकार हो तो नर पर्व्वत दूत और उसके घोड़ेको जेबमें धरके हर एक चन्द्रमें एक बार छः दिनका सफर तय करेगा। और जरूरत हुई तो कुशल पूर्वक दूत को घोड़े समेत वापस ले आवेगा।

(६) हमारे शत्रु ब्लेफस्कूके राजासे युद्ध उपस्थित होने पर नर पर्व्वतको हमारी सहायता करनी पड़ेगी। शत्रु लोग हम पर आक्रमण करनेके लिये जङ्गी जहाज तैयार कर रहे हैं। अतएव नर पर्व्वतको उचित है कि उनको नष्ट भ्रष्ट करनेकी यथा साध्य चेष्टा करे।

(७) नर पर्वतको छुट्टीके समय भारी भारी पत्थर रखने तथा

शाही इमारतोंकी दीवारों पर चढ़ा कर कुलियोंकी मदद करनी चाहिये।

(८) नर पर्व्वत दो चन्द्रमें हमारे राज्यकी परिधि अपने डगोंसे नाप कर ठीक करदे।

(८) नर पर्वत ऊपर कहे हुए नियमोंको पालन करनेके लिये यदि धर्म्मकी सौगन्द खायगा तो उसे खाने पीनेके लिये रोज १७२४ आदमियोंकी खुराक मिला करेगी, वह जब चाहेगा महाराजसे बिना रोक टोक मिल सकेगा और हम लोगभी सब तरहसे उसको अपना कृपा पात्र समझा करेंगे। हमारे राजत्वकालके ८१ वें चन्द्र के बारहवें दिन यह आज्ञापत्र 'बेल्फाबोराक' प्रासादमें लिखा गया।"

बजगुलामने दुष्टतासे कईशर्तें खराब लिख दीथीं परन्तु स्वाधीनताके लालचसे मैंने सबको स्वीकार कर लिया। ये सब काम होजाने पर मेरी बेड़ी काटी गई। ईश्वरके अनुग्रहसे मैंने स्वतन्त्रता पाई। महाराज भी उस समय वहीं उपस्थित थे। मैंने श्रीमान् के चरणोंमें साष्टाङ्ग प्रणाम किया। श्रीमान्ने प्रसन्न होकर मुझसे उठनेके लिये कहा। मैं भी चट पट उठ खड़ा हुआ। बहुतसी बातें कहनेके बाद श्रीमान्ने अन्तमें यों कहा "मैं आशा करता हूं तुम सदा मेरे आज्ञाकारी बने रहोगे और जो कुछ तुम्हारा आदर सत्कार किया गया है या आगे किया जायगा उसके अधिकारी तुम अपनेको बनाए रक्खोगे।"

कुछ दिनके बाद मैंने अपने एक मित्रसे पूछा कि लिलीपटके १७२४ आदमी जितना खा सकते हैं उतनाही मुझे खानेके लिये मिलेगा इसका क्या कारण है तो उन्होंने कहा कि महाराजके हिसाबियोंने हिसाब लगाकर यह संख्या बताई है। हिसाबियोंने यन्त्र द्वारा पहले मेरी ऊंचाई नापली पीछे हिसाब फैलाया तो मालूम हुआ कि मैं उनसे (लिलीपटवासियोंसे) बारह गुना लम्बा हूं। परन्तु मेरे और उनके शरीरकी बनावट एकही सी थी अत-

एव हिसाबियोंने हिसाब लगाया कि कमसे कम १७२४ * आदमी तो जरूरही मेरे बराबर होंगे। बस इसी लिये इतने आदमियोंकी खुराक मेरेवास्ते काफी समझी गई। पाठकगण! इतनेहीसे आप लोग वहांके निवासियोंकी विद्वता तथा महाराजकी बहुदर्शिता और सावधानता समझ सकते हैं।

स्वाधीनता पानेके बादही मुझे राजधानी देखनेकी लालसा हुई।

सप्तम परिच्छेद।

अब मैं स्वाधीन हूं। स्वाधीनता पानेके बादही मुझे राजधानी देखनेकी लालसा हुई। प्रार्थना करने पर महाराजने अनुमति भी दे दी पर चेता दिया कि खबरदार! पुरजनोंको अथवा उनके मकानोंको किसी प्रकारकी हानि न पहुंचाना। मेरे नगर भ्रमण का विज्ञापन सारे शहरमें ढिंढोरा पीट कर दिया गया। सबको घरसे बाहर निकलनेकी मनाही हुई। सब प्रबन्ध ठीक होजाने पर मैं नगर देखनेके लिये निकला। नगरकोटकी दीवार अढाई फुट ऊंची और करीब ग्यारह इञ्च चौड़ी है इस पर एक घोड़ा गाड़ी मजेमें चल सकती है दस दस फुट पर एक एक गुम्बज है। पश्चिम दरवाजेसे मैंने नगरमें प्रवेश किया। मैं सिर्फ फतूही पहने था। कोटके दामनके झटकेसे शायद छतों और छज्जोंको हानि पहुंचे इसी खयालसे मैंने कोट फोट कुछ नहीं पहना। यद्यपि महाराजकी कड़ी आज्ञाके कारण सब नगर निवासी अपने अपने घरोंमें घुसे थे तथापि मैं बड़ी सावधानीसे फूंक फूंक कर पांव रखता। छतों पर और छज्जों पर ठसा ठस भीड़ थी। मैं बहुत देश देशान्तरोंमें घूम चुका हूं पर ऐसी आबादी कहीं नहीं देखी। शहरकी बनावट चौकोर है। नगर कोटकी चारों दीवारें पांच पांचसौ फुट लम्बीहैं पांच पांच फुट चौड़ी दो बड़ी बड़ी सड़कें हैं जो

---

* ठोस पदार्थका क्षेत्रफल निकालनेके लिये घन किया जाता है जैसे १२×१२×१२=१७२८।

सारे शहरको चार हिस्सोंमें बांटे हुएहैं। छोटी छोटी गलियोंमें मैं नहीं गया—बाहरहीसे देखा। उनकी चौड़ाई डेढ़ फुटसे ज्यादे न थी। पांच लाख आदमी इस शहरमें रह सकते हैं, मकान भी तीन मञ्जिलेसे लेकर पांच मञ्जिले तक देखनेमें आये। बाजार बहुत सुन्दर और दुकानें खूब सजी थीं।

राजधानीका नाम 'मिलडेण्डों' है। नगरके ठीक बीचमें महाराजका राजमहल है। यहीं पर दोनों सड़कें आपसमें मिली हैं। राजमन्दिरसे बीस फुटकी दूरी पर चारों तरफदो फुट ऊंची दीवार है इस दीवार पर चढ़नेकी मुझे आज्ञा थी। मैं इस पर चढ़ गया। दीवारसे राजमन्दिर इतने फासले पर था कि मैं सब तरफकी चीजें देख सकता था। बाहरी चौक ४० फुटका था। दो चौक और थे फिर भीतर राजभवन था। इसको देखनेकी मुझे बहुत लालसा हुई पर देख न सका क्योंकि सदर फाटककी ऊंचाई डेढ़ फुट और चौड़ाई सातही इञ्च थी। बाहरका कोई मकान पांच फुटसे ज्यादे ऊंचा न था। अगरचे दीवालें पत्थरकी चार इञ्च चौड़ी थीं तो भी उन पर कूद कर चढ़ जाना असम्भवही था क्योंकि ऐसा करनेसे वह जरूर टूट फूट जातीं। महाराजकी भी आन्तरिक इच्छाथी कि मैं राजमन्दिरकी शोभा देखता पर लाचारी थी। मैं अपने डेरे पर लौट आया और उपाय सोचने लगा। सोचते सोचते उपाय निकल आया। सवेरा होतेही मैं सरकारी जङ्गलमें जो हजार गज दूर था गया। वहां मैंने चुन चुन कर बड़े बड़े पेड़ोंको छुरीसे काट गिराया। फिर उन्हीं लकड़ियोंसे तीन तीन फुट ऊंचे दो मजबूत टूल बनाये। तीसरे दिन पुनः शहरमें ढिंढोरा पीटा गया। मैं दोनों टूलोंको हाथमें लटकाए पुनः राजन्दिरकी ओर चला। जब पहले चौकके अहातेके पास पहुंचा तो एक टूल पर तो मैं खड़ा होगया और दूसरेको छतके ऊपरसे उठाकर पहले और दूसरे चौकको बीचवाली जमीन पर जिसकी चौड़ाई आठ फुटथी आहिस्तेसे रख दिया। फिर छतको लांघ कर दूसरे टूल पर

जारहा और पहलेको आंकड़ेसे उठा कर आगे रख दिया। बस इसी प्रकारसे मैं अन्त:पुरमें जा धमका। बीचवाले खनकी खिड़कियोंके सामने मुंह करके मैं लेट गया। खिड़कियां पहलेहीसे खुलीं थीं। अहा, भीतर कैसी अनिर्वचनीय सजावट थी! महारानी और महाराज कुमार अपने अपने कमरेमें सहेली और सहेलीं के साथ विराजमान थे। महारानी कृपा कटाक्षसे मुझे हेर कर जरा मुसकुरा उठीं और फिर चूमनेके लिये अपना हाथ बाहर कर दिया। मैंने उसे चूमा। बस इस तरह सारा राजभवन देख भाल कर मैं अपने डेरे पर वापस आया।

स्वाधीनता पानेके पन्द्रह दिन बाद एक रोज सवेरे महाराजका सिक्त्तर 'रेलड्रे सल' मेरे पास आया। साथमें केवल एकही आदमी था। गाड़ी कुछ दूर अलग खड़ी हुई। उसने मेरे साथ कुछ बात चीत करनी चाही। एक तो वह भला मानस दूसरे मेरा परमहितैषी—राजसभामें इसने मेरा बहुत कुछ उपकार किया था—इसलिये मैंने उसकी बात मानली। मैं लेट गया जिसमें वह सानीसे मेरे कानों तक पहुंचे परन्तु उसने कहा "नहीं, मुझे आप हाथहीमें उठालें और कानके पास लेजांय।" मैंने वही किया। पहले तो उसने मेरे छुटकारे पर आनन्द मनाया फिर कहा "अब हम लोगोंका भी काम जल्द पूरा होना चाहिये। हमारे राज्य की आज कल जैसी दशा है अगर वैसी न होती तो आपका इतनी जल्दी छूटना असम्भवही था। बाहरवाले चाहे हम लोगोंको अच्छी दशामें समझें परन्तु वास्तवमें आज कल हम लोगोंकी दशा बहुत ही खराब है। दो बड़ी आफतोंके मारे हम लोगोंका नाकोंदम है। एक तो आपसका विरोध और दूसरे बाहरके एक प्रबल शत्रुके आक्रमणकी आशङ्का—बस इन्हीं दो बातोंसे आजकल हम लोग हैरान हैं—अक्ल ठिकाने नहीं है मारे चिन्ताके चित्त चञ्चल है। आपसके विरोधका कारण सुनिये। सत्तरचन्द्रसे भी ज्यादे हुए होंगे यहां दो विरोधी दल खड़े हुए हैं। एकका नाम है 'ट्रामेक्सन'

और दूसरेका 'स्लामिकसन'। इन दोनोंमें केवल जूतेकी एड़ियों का ही भेद है। 'ट्रामिकसन' दलवालों के जूतोंकी एड़ियां ऊंची होती हैं और 'स्लामिकसन' की नीची। प्राचीन प्रथाके अनुसार ऊंची एड़ीवालेही माननीय हैं किन्तु वर्त्तमान महाराज नीची एड़ी वालोंके प्रेमीहैं। महाराजकी इच्छा है कि सब राजकर्म्मचारियोंके जूतोंमी एड़ियां नीचोहों बल्कि महाराजने तो अपने जूतेकी एड़ियां सबकी अपेक्षा एक 'डर' कम रखीहैं। एक इञ्चके चौदहवें हिस्सेको 'ड्रर' कहते हैं। यह विरोध इतना बढ़ गया है कि दोनों दलवाले न सङ्ग खाते हैं न पीते हैं और न आपसमें बात चीत करते हैं। एक दूसरेके जानो दुश्मन बन बैठे हैं। ऊंची एड़ीवाले गिनतीमें बहुत हैं पर जोर हमी लोगोंका ज्यादे है। परन्तु युवराज ऊंची एड़ीके तरफदार हैं। हम लोगोंने देखा है कि उनका एक जूता तो ऊंची एड़ीका और दूसरा नीची एड़ीका है। इसीसे उनकी चाल भी कुछ टेढ़ी पड़ती है। इसी आपसके महा-विरोधके समयमें ब्लूफस्कूका महापराक्रमी राजा हम लोगों पर चढ़ाई करनेवाला है। उसका राज्य भी हमारे राज्यके बराबर है और वह भी हमारे महाराजके समान प्रतापशाली है। आपने एक बार कहा था कि इस संसारमें और भी बहुत बड़े बड़े राज्य और उसमें आपके जैसे विराट् पुरुष वास करते हैं परन्तु हमारे पण्डितगण इन बातोंका विश्वास नहीं करते। वह कहते हैं कि संसारमें लिलीपट और ब्लूफस्कूके सिवाय और कोई राज्यही नहीं है। क्योंकि छः सौ चन्द्रके इतिहासोंमें भी किसी तीसरे राज्यका नाम नहीं आया है। उन लोगोंने अनुमान किया है कि आप चन्द्रलोकसे अथवा किसी नक्षत्रलोकसे यहां आपड़े हैं। आपसे अगर सौ आदमी यहां आजावें तो थोड़ेही दिनोंमें यहांके सब फल मूल और पशु साफ होजावें। अच्छा मैं क्या कहता था—हां छत्तिसचन्द्रसे इन दोनों राज्योंमें घोर युद्ध चल रहा है। इस युद्धका कारण भी सुन लीजिये। अण्डा खानेके समय सब कोई

अण्डेको उधरहीसे फोड़ते हैं जिधर उसका सिरा कुछ बड़ा होताहै। परन्तु वर्त्तमान महाराजके दादाने लड़कपनमें अण्डा तोड़नेके समय अपनी उंगली धोखेसे काट डाली थी। इस पर उनके पिताने यानी हमारे महाराजके परदादाने हुक्म जारी किया कि सब कोई अण्डेको छोटे सिरेकी तरफसे फोड़ें। जो ऐसा नहीं करेगा उसको बड़ी कड़ी सजा होगी। बस इस आज्ञाके प्रचार होतेही तमाम राज्यमें विद्रोह फैल गया। प्रजा सब लड़नेके लिये तैयार होगई। इतिहासोंसे जाना गया है कि छः बार अराजकता फैली—राजा प्रजामें घनघोर युद्ध हुआ। एक राजा खेत रहे और दूसरे गद्दीसे उतारे गये। ब्लूफस्कूके महाराजों विद्रोह शान्त होने पर जिन जिनको देशसे निकालनेकी सजा हुई उन्हें अपनी शरणमें लेगये। अण्डा छोटे सिरेकी तरफ नहीं फोड़नेके कारण करीब ग्यारह हजार आदमी समय समय पर शूली पर चढ़ाये गये। इन्हीं सब विषयोंको लेकर सैकड़ों बड़ी बड़ी पोथियां बनी और छपीं। लेकिन विपक्षियोंकी बनाई पुस्तकें बाजारोंमें बिकने नहीं पातीं। उनके छपनेकी भी सख्त मनाही है। विपक्षियोंको नियमके अनुसार अब राज्यमें कोई नौकरी भी नहीं मिलती है। ब्लूफस्कूके महाराजने धर्मकी दुहाई देकर हमारे महाराजको पुरानी रीति उठानेका दोष लगाया और दूतके द्वारा बारम्बार कहला भेजा कि 'ब्लन्डिक्राल' नामक धर्मशास्त्रके चौव्वनवें अध्यायमें धर्म प्रचारक 'लष्टोग' ने जो कुछ लिखा है उसके विरुद्ध यह कार्य्य है।" परन्तु वास्तवमें यह बात नहीं है। धर्मशास्त्रमें केवल इतनाही लिखाहै "सत्यधर्ममें विश्वास करनेवाले जिधरसे सुबीता देखें उधरहीसे अण्डेको तोड़ें।" इसलिये प्रत्येक मनुष्य अपने सुबीतेके अनुसार अण्डा फोड़ सकता है। सुबीता किधरसे फोड़नेमें है सो यह भी सब आदमी सहजमें समझ सकते हैं। और जिसको समझमें न आवे सो प्रधान मजिष्ट्रेटसे पूछले। जितने आदमी यहांसे निकाले गये थे वह सब ब्लूफस्कूके महाराज

की शरण हैं। महाराजने उनकी बहुत खातिरकी है। जो यहां रह गये हैं सो भीतरही भीतर उन दुष्टोंसे मिले हैं और गुप्त रीति से उनकी सहायता करते हैं। बस यही तो लड़ाईका कारण है। छत्तिस चन्द्रसे युद्ध चल रहा है। इन युद्धोंमें हमारे चालीस बड़े बड़े और छोटे न जाने कितने जहाज नष्ट हुए। तीस हजार सेना और मल्लाह काम आए। विपक्षियोंकी हमसे अधिक हानि हुई है। अब वह लोग फिर हम लोगों पर आक्रमण करने की तैयारियां कर रहे हैं। बहुतसे जङ्गी जहाज एकत्र हो चुके हैं। अब इस समय महाराजकी आशा भरोसा आपहीके ऊपर है। अब आपकी मरजी हो सो कीजिये मुझे महाराजने जो कुछ कहा था सो आपसे कह दिया।"

मैंने कहा "महाराजसे निवेदन करदीजिये कि मैं विदेशी हूं इस घराऊ झगड़ेसे मुझे क्या मतलब ? मैं किसीकी भी तरफदारी न करूंगा। मेरे लिये दोनों दलवाले समान हैं। लेकिन हां, अगर महाराज पर कोई आफत आवेगी तो मैं जान देनेको मुस्तैद हूं। जब तक दममें दम है महाराजका एक बाल भी बांका न होने दूंगा। जो जानसे महाराजकी और महाराजके राज्यकी रक्षा करूंगा।" इतना सुन रेलड्रेसल प्रसन्न हो चलता बना।

अष्टम परिच्छेद।

ब्लेफस्कू एक टापू है जो लिलीपटसे उत्तर पूर्व (ईशानकोण) में अवस्थितहै। बीचमें आठसौ हाथ चौड़ा एक समुद्र विद्यमान है जो लिलीपट और ब्लेफस्कूको अलग करता है। मैंने अभी तक ब्लेफस्कू देखा नहीं है। जबसे चढ़ाईकी खबर सुनी तबसे समुद्र के उस पार जानेका इरादा भी मैंने नहीं किया। जानेसे कदाचित शत्रुगण देखलें तो गोल माल हो। मेरे यहां पहुँचनेकी खबर शत्रुओंको कुछ भी न थी क्योंकि लड़ाईके समय दोनों राज्योंमें किसी तरहका सम्बन्ध नहीं रहता है। अगर किसीका शत्रुओंसे

कुछ लगाव पाया जाय तो उसे प्राण दण्ड दिया जाता है। जहाजोंकी आवा जाई एक दम बन्द होजाती है।

गुप्तचरोंने आकर कहा कि दुश्मनोंके जङ्गी जहाज उस पार बन्दरगाहमें आपहुंचे हैं। सुन्दर हवा पातेही वह लोग लङ्गर उठावेंगे। यह खबर सुनकर मैंने महाराजसे अपने मनकी बात कही फिर होशियार मल्लाहोंसे समुद्रकी गहराईकी बाबत पूछा तो मालूम हुआ कि बीचमें तो ज्वारके समय प्रायः छः फुट जल होजाता है लेकिन बाकी तमाम चारही फुट जल रहता है। मल्लाह लोग अकसर समुद्रका जल नापा करते हैं इसी लिये यह बात उनसे पूछी गई थी। ये सब बातें पूछ ताछ कर मैं समुद्रके पूर्व्वोत्तर तटकी ओर गया। वहां एक छोटीभी पहाड़ीके पीछे लेट कर दूरबीन लगाई तो देखा दुश्मनोंके पचास जङ्गी तथा और कई असबाब ढोनेके जहाज लङ्गर गिराये खड़े हैं। ये सब देख भाल कर मैं लौट आया। फिर बड़े बड़े रस्से तथा लोहेके छड़ मंगवाये। रस्से तो सुतलीके समान और छड़ मोजा बिननेकी सूईके बराबर थे। मैंने उन सबको मजबूत बनानेके लिये तेहरा किया। फिर छड़ोंको मोड़ कर बंसीसा बना लिया। पचास रस्सोंमें एक एक वंसी बांध कर मैंने पुनः समुद्राभिमुख प्रस्थान किया। वहां पहुंच कर कोट जूता और मोजे उतार दिये अपने चमड़ेवाले कोटको पहन कर समुद्रमें कूद पड़ा। ज्वार आनेको आधा घण्टा बाकी था। बहुत तेजीके साथ मैं जाने लगा। बीचमें लग भग तीस गज तैरना पड़ा। फिर जल कम था इससे पांव पांव गया। आधे घण्टेके भीतरही मैं जहाजोंके पास जा पहुंचा। जहाजवाले मुझे देखतेही डरके मारे समुद्रमें कूद पड़े। और जल्दी जल्दी तैर कर किनारे पर जा पहुंचे। वहां तीस हजारसे कम आदमी न होंगे जब जहाजवाले सब भागगये तो मैंने चटपट हर एक जहाजके पीछे छेदमें एक एक बंसी लगादी और सब रस्सोंको इकट्ठा कर गांठ दे दी। इधर शत्रुगण दना दन मुझ पर बाण दृष्टि कर रहे

थे। पर मैं इसकी कुछ भी परवाह न कर अपना काम करता जाता था। जब वह सब मुंहमें तीर मारने लगे तब मैंने अपना चश्मा जो पाकिटमें था निकाल कर आंखों पर लगा लिया। अगर चश्मा न लगता तो काम भी न कर सकता और आंखें भी फूट जातीं। जब सब काम ठीक होगया तब मैंने रस्सोंको जोरसे खेंचा लेकिन एकभी जहाज अपने ठिकानेसे न हिला। क्योंकि सबके सब मजबूत लङ्गरोंसे बंधे थे। बस मैंने जेबसे छुरी निकाल कर सब लङ्गरोंको काट डाला। फिर क्या था? एकही झटकेमें सब जहाज चल पड़े बस आगे मैं और पीछे पीछे जहाज थे।

ब्लेफस्कूवाले पहले तो मेरा असल मतलब न समझ सके केवल आश्चर्यके मारे घबड़ासे गये थे। जब मैं लङ्गरोंको काटने लगा तो उन लोगोंने समझा कि मैं जहाजोंको केवल तितर बितर करना चाहता हूं परन्तु जब उन्होंने मुझे रस्सा खेंचते और जहाजोंको एक पांतीमें जाते देखा तबतो उनका माथा ठनका। अब वह करही क्या सकतेथे? हताश होकर दुःखसे डाढ़ें मार कर रोने लगे। उस समयके दुःखको वर्णन करना मेरी शक्तिके बाहर है। जब कुछ दूर निकल आया और अपनेको निरापद पाया तब ठहर कर हाथ और मुंहमें चुभे हुए तीरोंको निकाल डाला और उसी मरहमको जिसका जिकर आगे आचुका है सब जगह लगालिया। चश्मा उतार कर जेबमें रक्खा। ज्वार आगई थी। इसलिये एक घण्टा ठहरना पड़ा। जब ज्वारका जोर घटा तब पांव पांव चलना शुरू किया। बस सब जहाजोंको लिये मैं निर्विघ्न लिलीपटके राजबन्दरमें आपहुंचा।

इस मुहिमका नतीजा—इस दुःसाहसिक कर्मका फल देखनेके लिये महाराज मन्त्रियोंके सहित किनारे पर उपस्थित थे। उन्होंने दूरहीसे पोतसमूहको अर्धचन्द्राकारसा आगे बढ़ता हुआ देखा पर मुझे नहीं। क्योंकि उस समय मैं छाती भर जलमें था। जब मैं बीच समुद्रमें आया तो जल गर्दनके बराबर था। महाराज मुझे न देख

और भी घबराये। उन्होंने समझ लिया कि मैं डूब गया और दुश्मन लोग लड़नेके लिये आरहे हैं। पर थोड़ीही देरमें उनकी सब चिन्तायें जाती रहीं। ज्यों ज्यों मैं आगे डग उठाता था त्यों त्यों समुद्रकी गहराई भी घटती जाती थी। जब मैं बहुत निकट आ पहुंचा तब जोरसे कहा "महाराजकी जय।" अब आनन्दका क्या ठिकाना था? जब मैं ऊपर आया तो महाराज बड़े आनन्दके साथ मुझसे मिले। मेरी बहुतसी प्रशंसाकी। उसी घड़ी मुझे "नर्डन" की उपाधि मिली। यह वहांकी सबसे बड़ी तथा सम्मान सूचक उपाधि है।

ये सब काम होजाने पर महाराजने मुझसे कहा "दुश्मनोंके बाकी जहाज भी मौका पाकर लेआना" ओफ! महाराजोंके लोभ का कुछ ठिकाना है! इतने पर भी तृप्ति नहीं! ब्लेफस्कूका राज्य अपने अधीन करना विद्रोहियोंका दमन करना—समस्त प्रजासे छोटे सिरेकी ओर अण्डे फुड़वाना और समस्त संसारको एक छत्र राज्य करनाही महाराजकी हार्दिक इच्छा है! बस इन्हीं इच्छाओंको पूर्ण करनेके लिये महाराज कमर कसे बैठे हैं! अह-र्निश इसीकी चिन्ता है! महाराजकी इच्छा पलटनेके लिये मैंने बड़ी बड़ी चेष्टायेंकीं। न्यायसे, नीतिसे, युक्तिसे महाराजको बहुत समझाया पर वह न समझे। तब मैंने खुलासा कह किया कि मैं एक स्वाधीन तथा वीर जातिको गुलाम बनानेका कारण नहीं हूंगा। जब राज-सभामें इसकी चर्चा चली तो जितने विज्ञ तथा चतुर पुरुष थे मेरीही बातोंका अनुमोदन करने लगे।

महाराजके विरुद्ध होतेही मेरे सिर आफतका टोकरा आपड़ा। जो कुछ मैंने कहा वह महाराजकी नीति तथा इच्छाके बिलकुल विपरीत था। खुल्लम खुल्ला महाराजकी बात काट कर मैंने बड़ी भूलकी। महाराज मनमें मुझसे बहुतही रुष्ट हुए। उन्होंने मेरे कसूरको नहीं माफ करनेकी ठानली। लेकिन सभामें इस बातको ऐसे ढङ्गसे कहा कि चतुरोंने तो चुप होकर मेरी तरफदारीकी

पर मेरे गुप्त शत्रुगण अनाप शनाप बकनेसे बाज न आये। नाना प्रकारके षड़यन्त्र रचे गये। जिनका परिणाम दो महीने के पश्चात् प्रकट हुआ। ये सब खबरें मुझे अपने मित्रोंसे मिली थीं। महाराजोंकी मित्रताका यही फल है! पहलेकी भलाई तो चूल्हेमें गई! जरासा उचित कहनेहीके लिये अब प्राणों पर आन बनी। अहह! वास्तवमें संसारकी लीला विचित्र है!

प्राय: तीन सप्ताह बाद ब्लेफस्कूके महाराजने सन्धिके निमित्त दूत भेजे। हमारे महाराजने भी सन्धि करली लेकिन शर्तें सब अपनेही फायदेकी रक्खीं। छ: दूत पांचसौ आदमियोंके साथ बड़े ठस्सेसे सन्धि करने आए थे। जैसे भारी राजाके वह सब दूत थे और जैसा भारी काम लेकर वह आये थे ठाट बाठ भी उनके वैसेही भारी थे। सन्धिके समय जहां तक बना मैंने उन दूतोंकी बहुत सहायताकी। और लोगोंसे मेरी भलाईका हाल सुन कर वह मुझसे भेंट करनेके लिये आये। मेरी बहुतसी बड़ाई करनेके बाद उन्होंने अपने राज्य ब्लेफस्कू में चलनेके वास्ते मुझे न्योता दिया। फिर मेरे अद्भुत कर्म्मोंको देखनेकी अभिलाषा प्रकटकी। मैंने उसी दम उनकी अभिलाषा पूरीकी। अब उनको पुन: वर्णन करके पाठकोंका समय नष्ट नहीं करूंगा।

मेरी करामातोंको देख कर वह सब बहुतही अचरज मानने तथा प्रसन्नता प्रकट करने लगे। यह सब होजाने पर मैंने उनसे कहा कि अपने महाराजसे जिनका यश संसारमें चारों ओर व्याप्त है मेरा बहुत बहुत प्रणाम कह देना। मैं स्वदेश जानेसे पहले अवश्य महाराजका दर्शन करूंगा। इतना सुन वह सब चले गये। कई दिनके अनन्तर मैंने अपने महाराजसे ब्लेफस्कू देखनेकी आज्ञा मांगी। महाराजने आज्ञा तो दी पर बड़े रूखे तौरसे। इस रूखाई का कारण कुछ समझ न सका। पीछे एक मित्रसे मालूम हुआ कि इसका भी कारण मेरा पुराना शत्रु बलगुलामही था। उसने मेरे विरुद्ध महाराजके कान भरे हैं। ब्लेफस्कूके दूतोंसे मिलनेका

हाल भी उसने कह दिया है। इनसे मिलनेको उसने शत्रुताका लक्षण बताया है। पर जो हो, मैं बेकसूर हूं—मेरा दिल साफ है। यहांके दरबार और मन्त्रियोंकी कार्रवाईयोंसे अब मैं भी कुछ कुछ परिचित होचला।

यहां पर यह कह देना उचितही है कि ब्लूफस्कूके दूत जो कुछ बोलते थे उसका अर्थ एक दुभाषी मुझे समझता जाता था। इन दोनों राज्योंकी भाषाएं भिन्न भिन्न हैं। दोनोंही अपनी अपनी भाषाको प्राचीन, सुन्दर और शक्ति पूर्ण बताते और दोनोंही एक दूसरेकी भाषाको घृणाकी दृष्टिसे देखते हैं। जहाजोंको छीन लेनेके कारण अभी हमारे महाराजका पल्ला भारी था अतएव उन्होंने दूतोंको लिलीपटकीही भाषामें सन्धि पत्र लिखने तथा वक्तृता देनेके लिये लाचार किया था। बहुतसे लोग दोनों बोलियां मजेमें बोलते थे। दोनों राज्योंमें वाणिज्य व्यापार होता था। इससे व्यापारियोंकी आवा जाई जारी थी। वहांके भगोड़े यहां और यहांके वहां आश्रय पातेथे। बड़े बड़े आदमियोंके लड़के रीति, नीति, तजरबेकारी, दुनियादारी आदि सीखनेके लिये आया जाया करते थे। बस इसी घनिष्टताके कारण समुद्र तट निवासी नामी आदमियोंमें ऐसे बहुत कम लोग थे जो दोनों बोलियोंमें बात चीत न कर सकते हों। जब मैं वैरियोंकी चालबाजीसे दुःखी होकर ब्लूफस्कू गया तब मुझे यह मालूम हुआ था। वहां जाना भी मेरे लिये अच्छाही हुआ इसका हाल आगे चल कर कहूंगा।

पाठकोंको याद होगा जिन जिन शर्तों पर मुझे स्वाधीनता मिली थी उनमेंसे दो तीन अत्यन्त निन्दनीय और कुत्सित थीं। इच्छा न रहने पर भी प्यारी स्वतन्त्रताके लोभसे उन्हें मैंने अङ्गीकार करलिया था। किन्तु अब मैं 'नर्डक' हूं—एक उपाधिधारी माननीय व्यक्ति हूं। उन सब निन्दनीय शर्तोंको पूरा करनेसे मेरी मानहानि होती—महाराजकी दी हुई उपाधिकी मानहानि होती। इन्हीं सब बातोंको सोच विचार कर शायद

महाराजने एक दिन भी उन नीच कर्म्मोंको करनेके लिये मुझसे नहीं कहा, अस्तु। कुछ दिनके बादही मैंने महाराजका एक और बड़ा भारी उपकार किया। और कोई चाहे इसे कुछ कहे पर मैं तो उपकारही कहूंगा।

एक दिन आधीरातके समय जब मैं खर्राटे लेरहा था अचानक शोर गुल सुन कर चौंक पड़ा। आंखें खोलीं तो देखा दरवाजे पर सैकड़ों आदमी हल्ला कर रहे हैं। इस गुल गपाड़ेको सुन कर मैं डर गया। वह लोग "वरग्लम" की रट लगाये थे। इतनेमें कई राजकर्म्मचारी भीड़को चीरते हुए मेरे पास आए और बोले "आप जल्द चलें—राजमहलमें आग लगी है! महारानीकी एक सखी उपन्यास पढ़ते पढ़ते सोगई और दियेको बलता हुआ छोड़ दिया था। बस उसी दियेसे आग लग गई है। यह उसकी गफ-लत है जो उसने दिया नहीं बुझाया। आप अब जल्द चलें नहीं तो सब स्वाहा होजायगा।" मैं सुनतेही उठ खड़ा हुआ। राह साफ कीगई। मैं चल पड़ा रात उजेली थी। कुशल हुई मेरे पैर के नीचे कोई कुचला नहीं। राजी खुशी राजमहलमें दाखिल हुआ। देखा दीवालोंमें सीढ़ियां लग चुकी हैं। लोग बागडोर लिये तय्यार हैं पर पानीका तोड़ा है क्योंकि जलाशय कुछ दूरथा। डोल सब अंगुश्तानेके बराबर थे। उन बिचारोंने मुझे भी एक डोल दिया लेकिन आग इतनी तेज थी कि उस डोलसे कुछ काम नहीं निकला। अफसोस! जल्दीके मारे मैं अपना कोट भूल आया नहीं तो उसीसे इस आगको बुझा देता! मैं केवल चमड़ेवाली जाकिट पहरे था। मामला बिलकुल बेडौल मालूम पड़ा—मकान से सब हाथ धो बैठे। पर मुझे एक बात सूझ गई और खूब मौके पर सूझी—अगर यह बात मुझे न सूझती तो वह सुन्दर राजमहल एक पलमें जरूर मटियामेल होजाता। शामको मैंने बहुतसी शराब पीली थी। यह शराब मुताती बहुत है। भाग्यसे मैंने अब तक एक दफे भी पेशाब नहीं किया था। आगको गर्मी और